Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2 | अंक 42

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

19 अक्तूबर 2017 ई. 28 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा ने हज़ारों लोग ऐसे पैदा किए कि जिन के हृदयों में उसने मेरा प्रेम भर दिया। कुछ ने मेरे लिए प्राणों को बलिदान कर दिया तथा कुछ ने मेरे लिए अपना आर्थिक विनाश स्वीकार कर लिया तथा कुछ मेरे लिए अपने घरों से निकाले गए तथा कष्ट दिए गए और सताए गए तथा हज़ारों ऐसे लोग हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर मुझे प्राथमिकता देकर अपने प्रिय धन मेरे सम्मुख रखते

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

72. बहत्तरवां निशान - कुछ कट्टर विरोधी जिन्होंने मुबाहले के तौर पर "झूठों पर ख़ुदा की ला'नत" कहा था। वे ख़ुदा के अज़ाब में ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त हुए जैसा कि मौलवी रशीद अहमद गंगोही पहले अंधा हुआ और फिर सांप के काटने से मर गया तथा कुछ लोग पागल होकर मर गए जैसा कि मौलवी शाहदीन लुधियानवी और मौलवी अब्दुल अज़ीज़, मौलवी मुहम्मद तथा मौलवी अब्दुल्लाह लुधियानवी जो प्रथम श्रेणी के विरोधी थे तीनों मर गए। इसी प्रकार अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन लखूके वाले अपने उस इल्हाम के पश्चात् कि झूठे पर ख़ुदा का अज़ाब उतरेगा मृत्यु के घाट उतरे।

73. तिहत्तरवां निशान - इसी प्रकार मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपने तौर पर मुझ से मुबाहला किया और अपनी पुस्तक में दुआ की कि जो झूठा है ख़ुदा उसे तबाह करे। फिर इस दुआ से कुछ दिन पश्चात् स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो गया। यह विरोधी मौलवियों के लिए यदि वे समझते तो कितना बड़ा निशान था।

74. चौहत्तरवां निशान - इसी प्रकार मौलवी मुहम्मद हसन भींवाला मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मरा जैसा कि मैंने विस्तारपूर्वक अपनी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' में लिखा है।

75. पचहत्तरवां निशान - मैंने अपनी पुस्तक नूरुलहक़ के पृष्ठ 35 से 38 तक यह भविष्यवाणी लिखी है कि ख़ुदा ने मुझे यह सूचना दी है कि रमज़ान में चन्द्र एंव सूर्य ग्रहण हुआ। यह भावी अज़ाब की एक भूमिका है। अत: इस भविष्यवाणी के अनुसार देश में ऐसी प्लेग फैली कि अब तक तीन लाख के लगभग लोगों की मृत्यु हा गई।

76. छिहत्तरवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है القيت عليك محبّةً منّی و لتصنع علٰی عینی अर्थात् ख़ुदा तआला का कथन है कि मैं लोगों के हृदय में तेरा प्रेम डालूंगा और मैं अपनी आंखों के सामने तेरा पोषण करूंगा। यह उस समय का इल्हाम है कि जब एक व्यक्ति भी मेरे साथ संबंध नहीं रखता था। फिर एक समय के पश्चात् यह इल्हाम पूरा हुआ और ख़ुदा ने हज़ारों लोग ऐसे पैदा किए कि जिन के हृदयों में उसने मेरा प्रेम भर दिया। कुछ ने मेरे लिए प्राणों को बलिदान कर दिया तथा कुछ ने मेरे लिए अपना आर्थिक विनाश स्वीकार कर लिया तथा कुछ मेरे लिए अपने घरों से निकाले गए तथा कष्ट दिए गए और सताए गए तथा हज़ारों ऐसे लोग हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर मुझे प्राथमिकता देकर अपने प्रिय धन मेरे सम्मुख रखते हैं[1] तथा मैं देखता हूं कि उनके हृदय प्रेम से परिपूर्ण हैं तथा बहुत से ऐसे लोग हैं कि यदि मैं कहूं कि वे अपने धन से पूर्णतया पृथक हो जाएं या अपने प्राणों को मेरे लिए अर्पण कर दें तो वे तैयार हैं। जब मैं इस स्तर की श्रद्धा एवं निष्ठा अपनी जमाअत के अधिकतर लोगों में देखता हूं तो सहसा मुझे कहना पड़ता है कि हे मेरे सामर्थ्यवान ख़ुदा ! वास्तव में कण-कण पर तेरा अधिकार है, तूने इन हृदयों को ऐसे उपद्रवों से भरपूर युग में मेरी ओर आकृष्ट किया और उन्हें दृढ़ता प्रदान की। यह तेरी शक्ति का महानतम चमत्कार है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 238-240)

---

1 **हाशिया** - मैं अपने लेख में इस स्थान पर पहुंचा था और यह वाक्य लिख चुका था कि उसी समय एक निष्कपट सत्यनिष्ठ का पत्र आया जो मेरी जमाअत में सम्मिलित है। चूंकि वह पत्र इस वाक्य के बिल्कुल लिखने के समय आया तथा उसके यथानुकूल था इसलिए उसे नीचे लिखता हूं और वह यह है :- मेरी बड़ी इच्छा है कि प्रलय में आपकी छत्रछाया में शुभ जमाअत में सम्मिलित हूं जैसा कि अब हूं आमीन। मान्यवर ! ख़ुदा तआला उचित तौर पर जानता है कि विनीत को उच्चतम गुणों से परिपूर्ण आप के अस्तित्व से इतना प्रेम है कि मेरा सम्पूर्ण धन, तन आप पर बलिदान है तथा मैं हज़ार प्राणों से आप पर न्यौछावर हूं। मेरे भाई और माता-पिता आप पर न्यौछावर हों। ख़ुदा मेरा अन्त आप के प्रेम और आज्ञाकारिता की स्थिति में करे। आमीन।

من اگر میداشتم بال و پرے   می پریدم سوئے کوئے تو مدام

(यदि मेरे पंख होते तो मैं हमेशा तेरे ही कूचे में उड़ता रहता) विनीत - सय्यद नासिर शाह ओवरसीयर - स्थान बारामूला कश्मीर - 15 अगस्त 1906 ई.।

वास्तव में यह निष्कपट नौजवान नितान्त निष्कपट भावना रखता है और दो हज़ार रुपए के लगभग या इससे अधिक अपने प्रेमावेग से दे चुका है। इस पत्र के साथ भी पहुंचे। इसी से।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

(भाग-2)

हज़रत इमाम मलिक ने अपनी इस किताब में (दूसरे) मसीह मरियम से संबंधित हदीसों का ज़िक्र तो क्या है। लेकिन इमाम महदी से संबंधित हदीसों का कोई ज़िक्र नहीं जिससे यह साबित हो रहा है कि इमाम मलिक जैसे प्रतिष्ठित आलिम महदी के अलग व्यक्तित्व वाली हदीसों को सही नहीं मानते थे बल्कि दूसरे मसीह को ही महदी मानते थे इस लिए महदी का अलग उल्लेख नहीं किया।

इसी तरह बुख़ारी जो बहुमत मोहद्देसीन के निकट अल्लाह की किताब के बाद सब से अधिक सहीह है इसमें (दूसरे) मसीह के साथ अलग किसी इमाम महदी के आने का उल्लेख नहीं है। लेकिन इसके विपरीत ईसा के नाज़िल होने का बाब (अध्याय) है ।

फिर सही मुस्लिम जो सिहाह सित्ता में बुख़ारी के बाद सबसे प्रामाणिक और मानक मानी जाती है इसमें मसीह के नाज़िल होने की हदीसें तो मौजूद हैं मगर उसी समय में मसीह के साथ इमाम महदी के आने का उल्लेख मौजूद नहीं, विस्तृत चर्चा तो दूर की बात है इन उक्त तीनों पुस्तकों में आने वाले के लिए इमाम महदी के शब्दों का उल्लेख नहीं किया गया था तो मानो शुरुआती दौर की इन तीन हदीस की पुस्तकों में जो अत्यधिक उच्च स्तर की और प्रमाणिक और गुणवत्ता में शेष पुस्तकों से बढ़ कर एक विशेष स्थान रखती हैं इमाम महदी की अलग व्यक्ति का उल्लेख न होना यह साबित कर रहा है कि इमाम महदी के अलग व्यक्तित्व की हदीसें मूज़ूअ (बनावटी) हैं।

यही कारण है कि महदी की हदीसों में इतना मतभेद और विसंगति पाई जाती हैं कि मोहद्देसीन को यह कहना पड़ा कि महदी की अक्सर हदीसें जिरह और आलोचना से खाली नहीं हैं। जैसे अल्लामा इब्ने खलदून ने मुक़दमा इब्ने ख़लदून में महदी की हदीसों के उल्लेख में लिखते हैं:

فَھٰذِہٖ جُمْلَۃُ الْاَحَادِیْثِ الَّتِیْ خَرَّجَھَا الْاَئِمَّۃُ فِیْ شَاْنِ الْمَھْدِیِّ وَخُرُوْجِہٖ آخِرَ الزَّمَانِ وَھِیَ کَمَا رَاَیْتَ لَمْ یَخْلُصْ مِنْھَا مِنَ النَّقْدِ اِلَّا الْقَلِیْلُ وَالْاَقَلُّ مِنْہُ

(मुकदमा इब्ने खुलदून अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन ख़ुलदून पृष्ठ 322 बैरूत लेबनान)

अर्थात हे पाठक जैसा कि तो देख रहा है कि यह समस्त हदीसें जो हदीस के इमामों ने महदी की शान और उसके आख़री ज़माना में उद्भव के बारे में विस्तार से बयान की हैं वे आलोचना से ख़ाली नहीं हैं, लेकिन इन में से बहुत थोड़ी हैं

फिर हदीसों की दो प्रमाणिक किताबें जो सहीहीन कहलाती हैं यानी सही बुखारी और सही मुस्लिम में ऐसी हदीसें मिलती हैं जिनमें मसीह को ही उम्मते मुहम्मदिया का इमाम बताया गया है। जैसे सहीह बुख़ारी में हदीस के शब्द पाए जाते हैं:

کَیْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْیَمَ فِیْکُمْ وَاِمَامُکُمْ مِنْکُمْ

(सही बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब नुज़ूल ईसा इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम)

यानी हे मुसलमानों तुम्हारी कैसी हालत होगी जब तुम्हारे बीच (दूसरे) इब्ने मरियम नाज़िल होगा इस हाल में कि वह तुम में से से तुम्हारा इमाम होगा।

इस हदीस में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (दूसरे) मसीह मरियम को ही उम्मते मुहम्मदिया का इमाम क़रार दिया है और किसी अलग इमाम महदी का उल्लेख नहीं किया। इसलिए एक ओर हज़रत इमाम बुखारी का महदी सम्बन्धित किसी अलग हदीस में कोई ज़िकर न करना और दूसरी तरफ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस हदीस को दर्ज करना साफ साबित कर रहा है कि हज़रत इमाम बुख़ारी का मसलक भी यही था कि (दूसरा) मसीह ही महदी होगा। महदी किसी अलग व्यक्तित्व या वुजूद का नहीं होगा बल्कि, (दूसरा) मसीह ही महदी होगा।

फिर सही मुस्लिम जिसे बुख़ारी के बाद सारी हदीस की पुस्तकों में एक विशेष स्थान और सम्मान प्राप्त है और जिसे सहीह बुख़ारी के बाद सही तरीन किताब कहा जाता है। यहां तक कि इस में भी (दूसरे) मसीह को ही इमाम महदी कहा गया हैं अत: हदीस के शब्द इस प्रकार हैं:

کَیْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْیَمَ فِیْکُمْ وَاِمَامُکُمْ مِنْکُمْ کَیْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْیَمَ فِیْکُمْ فَاَمَّکُمْ

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान बाब नुज़ूल ईसा इब्ने मरियम)

यानी हे मुसलमानों तुम्हारी क्या स्थिति होगी जब दूसरा मरियम तुम्हारे बीच प्रकट होगा और वही तुम्हारा इमाम होगा।

हे मुस्लिम! तुम्हारे साथ क्या होगा जब (दूसरा) इब्ने मरियम तुम में नाज़िल होगा और वही तुम्हारा इमाम होगा।

इन तीनों सन्दर्भों से साबित हो रहा है कि हज़रत इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम जैसे महानतम आदमी इस बात के मानने वाले थे कि महदी कोई अलग अस्तित्व नहीं है। क्योंकि दोनों बुज़ुर्गों ने अपनी सहीहीन में महदी के अलग व्यक्तित्व का उल्लेख नहीं किया लेकिन बल्कि इसके विपरीत दोनों ने ऐसी हदीसें दर्ज कर दीं जिन में आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह को ही उम्मते मुहम्मदिया का इमाम क़रार दिया है। इन दोनों बुज़ुर्गों का इस प्रकार की हदीसों का उल्लेख साबित कर रहा है कि ये दोनों बुज़ुर्ग मसीह को ही महदी समझते थे क्योंकि अगर उनके निकट महदी अलग अस्तित्व होता तो अवश्य इस प्रकार की रिवायतों को दर्ज करते जिन में महदी को अलग वुजूद के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इसके अलावा सुनन इब्ने माजा जिस की गिनती सिहाह सित्ता (यानी हदीसों की छह सही सबसे सहीह किताबों) में होता है। इसमें स्पष्टता के साथ यह हदीस मिलती है कि मसीह ही महदी होगा। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

لَا الْمَھْدِیُّ اِلَّا عِیْسَی بْنُ مَرْیَم

(इब्ने माजा किताबुल फितन बाब शिद्दतुज़्ज़मान)

यानी (दूसरे) ईसा बिन मरियम के सिवा कोई महदी नहीं।

मशहूर और प्रसिद्ध मुफ़स्सिर और इतिहासकार अल्लामा इब्ने कसीर ने इस हदीस के बारे में लिखा है कि यह प्रसिद्ध हदीस है।

(अन्हिाया फिल फित्न वल मलाहिम ले हाफिज़ इब्ने कसीर अद्दमशकी पृष्ठ 27 दारुल कुतुब अल्इलमी बैरूत. लेबनान प्रथम संस्करण 1419 हिजरी 1998ई)

इसके अलावा इस हदीस की सनद भी मानक है और इसके सभी रावी भरोसेमंद हैं। इसलिए अस्माउर्रिजाल की मशहूर किताब अत्तहज़ीब से इस हदीस के रावियों का भरोसेमंद होना नीचे लिखा जाता ताकि हदीस की गुणवत्ता का पता चल जाए।

इस हदीस के पहले रावी यूनुस बिन अब्दुल अला अस्सदफी हैं। इस से इमाम मुस्लिम, इमाम निसाई और इब्ने माजा आजि ने रिवायत की हैं। इब्ने अबी हातिम कहते हैं कि मेरे पिता इसे भरोसेमंद बताते और इसकी रिफ़अत शान का उल्लेख करते थे। इमाम निसाई कहते हैं कि वह मज़बूत है और अली बिन हसन बिन बरीद कहते हैं कि वह हाफिज़ुल हदीस था। तहावी ने कहा है कि वह आकिल था और इब्ने हब्बान ने इसका उल्लेख भरोसेमंद रावियों में किया है।

(तहज़ीबुल तहज़ीब जिल्द 11 पृष्ठ 1388 इब्ने हज्र अल्असकलानी वफात 582 हिजरी)

इस हदीस के दूसरे बयान करने वाले मुहम्मद बिन इदरीस शाफई हैं। मुहद्दिसों के निकट इनका मज़बूत होना प्रमाणिक है यह शाफी हैं जो शाफी मस्लक संस्थापक थे।

तीसरे रावी मुहम्मद बिन खालिद जंदी हैं उनके बारे में इमाम इब्न मोइन ने कहा है कि वे भरोसेमंद हैं और तहज़ीबुल तहज़ीब में इब्न मोइन को इमामुल जरह वल तअदील लिखा है। बेशक इमाम हाकिम ने उन्हें मजहूल कहा है लेकिन मजजहूल का अर्थ केवल इतना है कि मैं उन्हें नहीं जानता। अत: हाकिम कामुहम्मद बिन खालिद जंदी को मजहू लकहना उन्हें ग़ैर भरोसेमंद साबित नहीं करता।

(तहज़ीबुल तहज़ीब शब्द मुहम्मद बिन खालिद अलजुंदी)

चौथे रावी अबान बिन सालेह हैं। इब्ने मुईन और अजली और याक़ूब बिन शीबा और अबू ज़रअ और अबू हातिम के निकट भरोसेमंद हैं। और इमाम इब्ने हब्बान ने उन्हें मज़बूत रावियों में शुमार किया है।

(तहज़ीबुल तहज़ीब जिल्द 1 शब्द अब्बान बिन सालिह)

पांचवें रावी हज़रत इमाम हसन बसरी हैं जो हर तरह से आदिल और भरोसेमंद प्रसिद्ध हैं।

छठे रावी हज़रत अनस बिन मालिक हैं जो सहाबी रसूल हैं जिनके

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आज कल पश्चिमी प्रेस और मीडिया यह प्रश्न करता है कि तुम इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा के बारे में बात करते हो, लेकिन मुसलमानों की बहुमत ये बातें नहीं करती और न ही वे तुम्हें मुसलमान समझती है। अधिकांश मुसलमान नहीं समझते हैं और अहमदियों की संख्या अन्य मुसलमानों की तुलना में बहुत कम है। जब यह स्थिति है तो अहमदी कैसे इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर चलने का दावा कर सकते हैं। जर्मनी में भी पिछले दौरे में यही सवाल मुझसे किया गया और फिर यह भी कहते हैं कि बाकी मुसलमानों को तुम किस तरह इस शिक्षा पर चलने के लिए राज़ी करोगे।

हमारा जवाब हमेशा यही होता है कि हम इस्लाम की जिस शिक्षा की बात करते हैं इसे कुरआन कीरम से, हदीस से, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत से बात करते हैं। हमारी कोई हवा में बातें नहीं हैं कि दूसरों को प्रभावित करने के लिए इन आपत्तियों को दूर करने के लिए हम कहते हैं कि इस्लाम की शिक्षा चरमपंथ की शिक्षा हरगिज़ नहीं है या कोई आजकल के हालात देख कर हम ने अपना यह रुख़ धारण नहीं क्या हुआ। हम यह साबित करते हैं कि इस्लाम की शिक्षा हमेशा ख़ुदा तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों को अदा करने की शिक्षा है।

जहां तक यह सवाल है कि दूसरे मुसलमानों को शिक्षा के अनुसार हम कैसे राज़ी करेंगे तो इसका जवाब यह है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों की ऐसी विकृत स्थिति के समय में मसीह मौऊद और महदी मौऊद के ने आना था और मुसलमानों का भी सुधार करना था और दूसरी दुनिया को इस्लाम का सच्चे संदेश पहुंचाना था। अतः आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी बड़ी शान से पूरी हुई और जब यह स्थिति थी तो मसीह मौऊद और महदी मौऊद को अल्लाह तआला ने भेजा और उसने आकर हमें इस्लाम और कुरआन की वास्तविक शिक्षा का एहसास दिया और इस्लाम के हर आदेश की हिक्मत समझाई और हम अहमदी मुसलमान जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है उसके अनुसार इस्लाम की शिक्षा मुसलमानों को भी और ग़ैर मुस्लिमों को भी बता रहे हैं। हमारा काम तब्लीग़ का काम है। मिशनरी काम है। अतः इस को हम कर रहे हैं और इन्शा अल्लाह करते रहेंगे।

हम उन्हें यही कहते हैं कि तुम यह कहते हो कि दूसरे मुसलमानों को कैसे इस शिक्षा पर चलाओगे तो जमाअत अहमदिया जो अब करोड़ों में फैल चुकी है अधिकतर मुसलमानों के दूसरे फिर्कों से आकर ही शामिल हुए हैं जो संदेश को समझते हैं और ज्यों-ज्यों लोगों पर वास्तविक शिक्षा स्पष्ट होती चली जाती है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे का पता चलता चला जाता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश और आप की पेशगोइयों को समझने लगते हैं मुसलमानों में भी ये लोग बहुमत में हम में शामिल हो रहे हैं और दूसरे धर्मों से भी लोग हम में शामिल हो रहे हैं और इन्शा अल्लाह यही कम संख्या एक दिन अधिकता में बदल जाएगी। यह अल्लाह तआला का वादा है और इस के नमूने हर दिन हम रोज़ देखते हैं।

प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में लाखों जमाअत में शामिल होते हैं, इनमें से अधिकांश मुसलमानों में से ही हैं इस के बावजूद के हमारे पास संसाधन कम हैं, मुबल्लिग़ों की संख्या बहुत कम है, लेकिन फिर भी ख़ुदा तआला असामान्य परिणाम पैदा कर रहा है, बल्कि बहुत से लोग ऐसे जमाअत में शामिल होते हैं, जिन्हें ख़ुदा तआला स्वयं मार्गदर्शन करता है। अतः सपनों के माध्यम से बहुतों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत का परिचय हुआ और आप की सच्चाई उन पर स्पष्ट हुई और फिर एक समय के बाद किसी कारण से उन्हें अपनी खवाबें याद आती हैं। कई बार यह होता है कि बचपन में ख़ुवाबें देखीं या बहुत पहले समय में देखी हैं या बहुत जवाना में देखीं या बहुत समय पहलेदेखीं और फिर कुछ समय पहले उन्हें किसी न किसी कारण से वह ख़बाव याद आ जाती है तो वह बैअत कर लेते हैं। कुछ को पहले परिचय होता है और फिर वे इस्तिख़ारा करते हैं और अल्लाह तआला के मार्गदर्शन में जमाअत में शामिल हो जाते हैं। कुछ तब्लीग़ सुनते हैं जिस में अब मुबल्लग़ीन मुअल्लेमीन के अतिरिक्त अब हमारे रेडियो और टेलीविज़न के चैनल भी शामिल हो गए हैं, तो इस संदेश को सुन कर ख़ुदा तआला उन के दिल खोलता है। कुछ ऐसे लोग हैं जो जमाअत के विरोधियों के विरोध और उनके अंजाम को देख कर अहमदियत स्वीकार कर लेते हैं। कुछ को अल्लाह तआला निशान दिखाता है।

ख़वाबों के माध्यम से अल्लाह तआला की तरफ से अहमदियत की सच्चाई की तरफ मार्गदर्शन की घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन। कई बार निशान लोगों के लिए हिदायत का और बैअत का माध्यम बन जाते हैं। कई बार विरोधी भी नेक प्रकृति लोगों के लिए सच्चाई की तहकीक के रास्ते खोल देते हैं। विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाले ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

अल्लाह तआला लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा की ओर ला रहा है और इंशा अल्लाह एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा ही वास्तविक इस्लाम दुनिया में विजयी होगा। अल्लाह तआला प्रत्येक को तौफीक दे कि वह इस बरकत से हिस्सा लेने के लिए लेने वाला हो और इस ओर ध्यान दे।

आदरणीया ख़ुर्शीद रुकय्या साहिबा (पत्नी आदरणीय मंज़ूर अहमद घनोखे दरवेश कादियान) और आदरणीय डाक्टर सलाहुद्दीन साहिबन्यू जर्सी की वफात। मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा गायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 सितम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज कल पश्चिमी प्रेस और मीडिया यह प्रश्न करता है कि तुम इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा के बारे में बात करते हो, लेकिन मुसलमानों की बहुमत ये बातें नहीं

करती और न ही वे तुम्हें मुसलमान समझती है। अधिकांश मुसलमान नहीं समझते हैं और अहमदियों की संख्या अन्य मुसलमानों की तुलना में बहुत कम है। जब यह स्थिति है तो अहमदी कैसे इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर चलने का दावा कर सकते हैं। जर्मनी में भी पिछले दौरे में यही सवाल मुझसे किया गया और फिर यह भी कहते हैं कि बाकी मुसलमानों को तुम किस तरह इस शिक्षा पर चलने के लिए राज़ी करोगे। तुम अगर कहते हो यही इस्लामी शिक्षा है।

हमारा जवाब हमेशा यही होता है कि हम इस्लाम की जिस शिक्षा की बात करते हैं इसे कुरआन कीरम से, हदीस से, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत से बात करते हैं। हमारी कोई हवा में बातें नहीं हैं कि दूसरों को प्रभावित करने के लिए इन आपत्तियों को दूर करने के लिए हम कहते हैं कि इस्लाम की शिक्षा चरमपंथ की शिक्षा हरगिज़ नहीं है या कोई आजकल के हालात देख कर हम ने अपना यह रुख़ धारण नहीं क्या हुआ। हम यह साबित करते हैं कि इस्लाम की शिक्षा हमेशा ख़ुदा तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों को अदा करने की शिक्षा है।

जहां तक यह सवाल है कि दूसरे मुसलमानों को शिक्षा के अनुसार हम कैसे राज़ी करेंगे तो इसका जवाब यह है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों की ऐसी विकृत स्थिति के समय में मसीह मौऊद और महदी मौऊद के ने आना था और मुसलमानों का भी सुधार करना था और दूसरी दुनिया को इस्लाम का सच्चे संदेश पहुंचाना था। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी बड़ी शान से पूरी हुई और जब यह स्थिति थी तो मसीह मौऊद और महदी मौऊद को अल्लाह तआला ने भेजा और उसने आकर हमें इस्लाम और कुरआन की वास्तविक शिक्षा का एहसास दिया और इस्लाम के हर आदेश की हिक्मत समझाई और हम अहमदी मुसलमान जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है उसके अनुसार इस्लाम की शिक्षा मुसलमानों को भी और ग़ैर मुस्लिमों को भी बता रहे हैं। हमारा काम तब्लीग़ का काम है। मिशनरी काम है। अत: इस को हम कर रहे हैं और इन्शा अल्लाह करते रहेंगे। इलाही जमाअतें और नबियों की जमाअतें दिनों में तरक्की नहीं करती हैं या फैल जाया करती हैं, बल्कि धीरे-धीरे फैलती और बढ़ती हैं।

हम उन्हें यही कहते हैं कि तुम यह कहते हो कि दूसरे मुसलमानों को कैसे इस शिक्षा पर चलाओगे तो जमाअत अहमदिया जो अब करोड़ों में फैल चुकी है अधिकतर मुसलमानों के दूसरे फिर्कों से आकर ही शामिल हुए हैं जो संदेश को समझते हैं और ज्यों-ज्यों लोगों पर वास्तविक शिक्षा स्पष्ट होती चली जाती है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे का पता चलता चला जाता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश और आप की पेशगोइयों को समझने लगते हैं मुसलमानों में भी ये लोग बहुमत में हम में शामिल हो रहे हैं और दूसरे धर्मों से भी लोग हम में शामिल हो रहे हैं और इन्शा अल्लाह यही कम संख्या एक दिन अधिकता में बदल जाएगी। यह अल्लाह तआला का वादा है और इस के नमूने हर दिन हम रोज़ देखते हैं।

प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में लाखों जमाअत में शामिल होते हैं, इनमें से अधिकांश मुसलमानों में से ही हैं इस के बावजूद के हमारे पास संसाधन कम हैं, मुबल्लिग़ों की संख्या बहुत कम है, लेकिन फिर भी ख़ुदा तआला असामान्य परिणाम पैदा कर रहा है, बल्कि बहुत से लोग ऐसे जमाअत में शामिल होते हैं, जिन्हें ख़ुदा तआला स्वयं मार्गदर्शन करता है। अत: सपनों के माध्यम से बहुतों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत का परिचय हुआ और आप की सच्चाई उन पर स्पष्ट हुई और फिर एक समय के बाद किसी कारण से उन्हें अपनी खवाबें याद आती हैं। कई बार यह होता है कि बचपन में ख़ुवाबें देखीं या बहुत पहले समय में देखी हैं या बहुत जवाना में देखीं या बहुत समय पहले देखीं और फिर कुछ समय पहले उन्हें किसी न किसी कारण से वह ख़बाव याद आ जाती है तो वह बैअत कर लेते हैं। कुछ को पहले परिचय होता है और फिर वे इस्तिख़ारा करते हैं और अल्लाह तआला के मार्गदर्शन में जमाअत में शामिल हो जाते हैं। कुछ तब्लीग़ सुनते हैं जिस में अब मुबल्लग़ीन मुअल्लेमीन के अतिरिक्त अब हमारे रेडियो और टेलीविज़न के चैनल भी शामिल हो गए हैं, तो इस संदेश को सुन कर ख़ुदा तआला उन के दिल खोलता है। कुछ ऐसे लोग हैं जो जमाअत के विरोधियों के विरोध और उनके अंजाम को देख कर अहमदियत स्वीकार कर लेते हैं। कुछ को अल्लाह तआला निशान दिखाता है।

अत: जब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी फरमाया कि मैं तुझे इज़्ज़त दूंगा और बढ़ाऊँगा फिर 1883 में जब आप ने कोई नियमित जमाअत का गठन भी नहीं किया था बल्कि आप ने दावा भी नहीं किया था बहुत कम लोग बल्कि आप से परिचित थे। अल्लाह तआला ने फरमाया

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيْ (अल्मुजादिला 22)

कि ख़ुदा ने लिख दिया है कि विजय मेरा और मेरे रसूल का है। उस समय तो आपका मसीह और महदी होने का दावा भी कोई नहीं था। फिर अल्लाह तआला ने आप को कहा لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهٖ कि कोई नहीं जो ख़ुदा तआला के शब्दों को टाल सके। आपकी जमाअत की प्रगति और तरक्की के भी कई इल्हाम हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया मैं उन्नति दूंगा और तेरे प्यार करने वालों का गिरोह बढ़ाऊंगा। अत: आज इस एकेले आदमी की जमाअत जिस से अल्लाह तआला ने तरक्की का वादा किया था, इस की जमाअत सारी दुनिया में फैल चुकी है और हर दिन बढ़ रही है। हर रोज़ नए लोग शामिल हो रहे हैं कैसे ख़ुदा तआला रास्ते खोलता है किस तरह से शामिल होने वालों को मार्ग दर्शन देता है। इन की कुछ घटनाएं मैं प्रस्तुत करूंगा।

ख़वाबों के माध्यम से अहमदी होने वालों की कुछ घटनाएं हैं।

काज़ान से हमारे मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि एक दोस्त सन सफी लोइफ के साथ तब्लीग़ का सम्पर्क स्थापित हुआ। उनके साथ सवाल तथा जवाब होते रहे। कुछ समय बाद उन्होंने बैअत की कर ली। अपनी बैअत की घटना वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि अल्लाह ने मुझे ख़्वाब दिखाया कि सीरिया के क्षेत्र में हूँ और दो गिरोह आपस में लड़ रहे हैं उनकी लड़ाई के समय एक तीसरा गिरोह आता है और इन दोनों को समझाता है कि आप एक दूसरे को मार कर ज़ुल्म कर रहे हो। यह लड़ाई खत्म करो और आपस में सुलह करो। तो वह तीसरे गिरोह के कहने पर अपने हथियार फेंक देते हैं और आपस में एक दूसरे को गले लगाना शुरू कर देते हैं। इस पर यह रूसी दोस्त कहते हैं कि मैं किसी से पूछता हूं कि यह तीसरी जमाअत कौन सी है जिसने इन दोनों गिरोहों की सुलह करवाई है तो मुझे बताया जाता है कि यह जमाअत अहमदिया के लोग हैं। इस तरह एक दूसरे ख़्वाब में यह कहते हैं मुझे अल्लाह तआला ने दिखाया कि बारिश का मौसम बना हुआ है और ठंडी हवा चल रही है और मुझे आवाज़ आई कि अहमदियत ही सही आस्था है। कहते हैं इन सपनों के बाद मैंने बैअत कर ली।

फ्रांस की एक महिला मालिका साहिबा हैं। अपनी अहमदियत स्वीकार करने की घटना का बताते हुए लिखती हैं कि मेरे सारे परिवार में अहमदियत का संदेश पहुंच चुका था और इस संबंध में अक्सर हमारे घर में बात भी होती रहती थी कि अमुक आदमी को अल्लाह तआला ने ख़्वाब के माध्यम से मार्गदर्शन किया और जमाअत में शामिल हो गए मैंने इन बातों को सुन रखा था लेकिन मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा था। कहती हैं कि एक दिन मैंने ख़ुदा तआला से दुआ की कि तू ही मुझे बता कि क्या अहमदियत एक सीधा मार्ग है या ग़लत है? कहती हैं अगली तीन रातों में ख़ुदा तआला ने मुझे निरन्तर तीन ख़वाब दिखाए। पहले ख़्वाब में मैंने देखा कि जैसे क़यामत आ गई है और हर तरफ अराजकता है। लेकिन मेरे भाई बहन जो अहमदी हो चुके हैं वह बिल्कुल अराजकता में नहीं बल्कि बहुत ख़ुश हैं, जबकि मैं चीख़-पुकार कर रही हूँ कि हालात बहुत ख़तरनाक हैं लेकिन बिल्कुल चिंतित नहीं है बल्कि कह रहे हैं कि हमें जमाअत अहमदिया की मज्लिस में जाना है। मैं ख़्वाब की हालत में ही इन के साथ चिमट जाती हूं। फिर एक ख़्वाब में मैंने देखा कि मेरी बहन जो अहमदी हो चुकी है वह मुझ से कह रही है कि नमाज़ पढ़ो। यही एक तरीका है इसी तरह तीसरी रात मैंने ख़्वाब देखा कि मैं अपने भाई बहन के साथ बैठी हुई हूँ और मैंने महसूस किया कि जैसे अल्लाह तआला ने मेरे हाथ में कुछ लिखा है तो इन सपनों के बाद कहते हैं मेरे दिल से शंका दूर हो हो गई कि यह जमाअत की सच्चाई के बारे में ही ख़्वाब हैं और मैंने बैअत कर ली है और अब पूरा परिवार अहमदियत में शामिल हो चुका है।

अब्दुल अज़ीज़ तराड़वे साहिब जो आइवरी कोस्ट के एक गांव शीपो (Chiepo) में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। यह बताते हैं कि एक बुज़ुर्ग व्यक्ति वामारा तरोड़े साहिब ने एक दिन ख़्वाब में देखा कि उनके गांव में अरब लोग आए हैं। ख़्वाब में ही उनके आने पर कुछ लोग कहने लगे कि ये लोग असली अरब नहीं हैं। उसी समय वे कहते हैं मैंने एक आवाज़ सुनी कि अगर तुम ख़ुदा तआला को पाना चाहते हो तो इन्हीं लोगों के साथ पाओगे। इसके कुछ दिन बाद कहते हैं कि अहमदियों के मुबल्लिग़ हमारे गांव आए तो कुछ लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि यह मुसलमान नहीं हैं। उन्हें पता था कि अहमदी मुबल्लिग़ हैं। उन्होंने कहा कि यह तो मुसलमान ही नहीं हैं और इन लोगों से दूर रहा जाए। यही हमारे मौलवी का

फत्वा है कि हम दूर रहें। उन्होंने जब यह देखा तो उन्हें अपना ख़्वाब याद आया। इस के कुछ दिन बाद ही वह बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए। जलसा सालाना आइवरी कोस्ट में भी यह शामिल हुए और महान जोश और उत्कृष्टता के साथ शामिल हुए।

कांगो ब्राजोवील से बशीर साकलह (Basheer Ntsakala) साहिब हैं यह कहते हैं कि मुझे पहली बार 2014 ई के वहां के स्थानीय जलसा सालना में भाग लेने का अवसर मिला। जहां पता चला कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वफात पा चुके हैं और अब वह आसमान से जीवित नहीं उतरेंगे। यह भी ज्ञात हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि एक समय ऐसा आएगा के लिए मुसलमान संप्रदायों में विभाजित हो जाएगें और इस्लाम केवल नाम मात्र का शेष रह जाएगा उस समय हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आएंगे और केवल उनकी जमाअत हिदायत पर होगी। कहते हैं कि फिर मैंने जमाअत अहमदिया के साहित्य और किताबों का अध्ययन शुरू कर दिया जिस से मुझे अहमदियत की सच्चाई को समझने का मौका मिला। इसी दौरान एक रात मैंने ख़्वाब देखा कि एक आदमी ने मुझे सफेद और गुलाबी रंगे का सुन्दर लिबास दिया है और फिर रमज़ान के महीने में एक दिन ख़्वाब देखा कि मैं बहुत अच्छी बस में सफर कर रहा हूँ इस ख़्वाब के बाद मेरी तसल्ली हो गई कि बस चूंकि सफर का माध्यम होती है यही कारण है कि जिस ओर मैं सफर करने के लिए जा रहा हूँ वह बहुत उच्च है। अत: इस ख़्वाब के बाद मैंने अहमदियत को स्वीकार कर लिया।

करगिज़स्तान जमाअत के नए अहमदी अशलन रामेल (Ishalin Rameel) साहिब अपने अहमदियत स्वीकार करने की घटना बताते हैं। कहते हैं एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुआ इसलिए इस्लाम मेरे लिए अजनबी धर्म नहीं था लेकिन मैंने धर्म के उद्देश्य के बारे में कभी सोचा ही नहीं और भरसक प्रयत्न के बारे में कभी नहीं सोचा था। जहां मैं काम करता हूं वहां किर्गिस्तान के सदर के साथ मुलाकात हुई तो इन की बातों से इस्लाम का वास्तिवकता मुझ पर धीरे-धीरे खुलनी शुरू हुई और मुझे इन बातों का एहसास हुआ कि वर्तमान समय के मुसलमान सच्चे इस्लाम का पालन नहीं कर रहे हैं। उनसे बात करके मुझे मेरे सवाल के जवाब मिलने शुरू हो गए कि कुरआन के संदर्भ, सुन्नत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों की प्रामाणिक किताबों, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मेरे विभिन्न जो ख़ुत्बे थे, उनकी रोशनी में थे। कहते हैं मैंने देखना शुरू किया। इस प्रकार पहली बार मैंने कुरआन पढ़ना शुरू कर दिया। फिर एक दिन कहते हैं मैंने बैअत करने का फैसला किया। उसी रात मैंने ख़्वाब में देखा कि मेरे पिता जी के दोस्त ने मुझे एक ओर इशारा करते हुए कहा कि इस जगह पर एक निशान है लेकिन निशान के बारे में किसी को मत बताना क्योंकि आतंकवादी आकर इस निशान को नष्ट कर देंगे। अत: मैंने इस निशान को जाकर देखा, वह एक बहुत बड़ा बाग़ था। बाग़ में तितलियों की तरह के प्राणी उड़ रहे थे। इसलिए मैंने सोचा कि हम अल्लाह तआला के इस निशान को कैसे छुपा सकते हैं। इसी दौरान मैं ख़्वाब में पक्षी की तरह उड़ने लग जाता हूँ। वह कहते हैं और उड़ कर अपने पिता जी के दोस्तों के घर गया। वह चाय पी रहे होते हैं लेकिन मुझे देख कर बस एक पक्षी मानते हैं लेकिन मैं उन्हें तीन बार अल्लाहो अकबर कहता हूं तो वह घबरा जाते हैं कि यह पक्षी कैसे बोल सकता है। कहते हैं फिर आसमान की ओर उड़ जाता हूँ तो आसमान की ओर उड़ते समय पक्षी से एक फिरश्ते में बदल जाता हूँ। फिर मैं उस ज़मीन को देखता हूं कि हर कोई मर चुका है और कोई भी ज़िन्दा नहीं। यह कहते हैं कि मैं अपने घर की तरफ अपने सपनों में उड़ कर आता हूं। घर में प्रवेश करते वक्त मैं जाग रहा हूँ। इस ख़्वाब के बाद मैं कहता हूं कि अल्लाह तआला ने मुझे आध्यात्मिक शक्ति दी है। अत: इस के बाद मैंने बैअत कर ली और जमाअत अहमदिया में शामिल हो गया।

हम्दी मुहम्मद अब्दुल हादी साहिब मिस्र के कहते हैं कहते हैं कि अहमदियत के बारे में जानने से बहुत पहले मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक सुनसान और वीरान रास्ते पर एक गुमनाम मंज़िल की ओर चल रहा हूँ। ऐसे में एक नेक इंसान आता है और मुझे इस रास्ते से निकालने के लिए एक नया तरीका निकालता है। अजीब बात यह है कि कोई प्रतिरोध किए बिना सहर्ष इस रास्ते पर चलना शुरू कर देता हूँ। जिस पर वह नेक इंसान मुझे लाकर खड़ा कर देता है, इस का कारण यह है कि इसके सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से मुझे यह एहसास होता है कि जैसे इस ने मुझे बुरे अन्जाम से बचा कर अच्छे अन्जाम और अच्छे लोगों के रास्ते पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस रास्ते पर चलते चलते कुछ देर के बाद एक ऊंचे स्थान पर पहुँच कर अपने पुराने रास्ते की तरफ देखता हूँ तो वहाँ पर एक अत्याचारी आदमी को कुछ लोगों से काम करवाते हुए पाता हूं तो मुझे लगता है कि अगर नेक इंसान मुझे रास्ते से न हटाता तो आज मैं भी कई लोगों की तरह इस ज़ुल्म का शिकार हो जाता। ख़्वाब में ही मुझे यह विचार आता है कि शायद यह नेक व्यक्ति ख़ुदा का नबी मूसा अलैहिस्सलाम है। कहते हैं बहुत समय बाद जब मेरा जमाअत अहमदिया से परिचय हुआ तो समझ में आया कि जिस रास्ते पर अग्रसर था वह तबाही और बर्बादी की ओर जाता था और जिस नेक इंसान ने मुझे इस रास्ते से उठाकर नए रास्ते पर डाल दिया वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे जब कि नया रास्ता अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम है।

तो यह कुछ नमूने मैंने प्रस्तुत किए। कोई रूस के पूर्व राज्यों काज़ान, किरगिज़स्तान से कोई यूरोप के देश का है। कोई पश्चिमी अफ्रीका में है कोई सेंट्रल अफ्रीका में है कोई अरब देश का है। विभिन्न देशों के लोग अलग-अलग भाषा बोलते हैं लेकिन एक ओर ही सब का मार्गदर्शन हो रहा है। यह मार्गदर्शन कौन कर रहा है यह निश्चित रूप से अल्लाह तआला उन लोगों को कह रहा है जिस ने आपको फरमाया कि मैं तेरे शुद्ध और पवित्र प्यारों के गिरोहों को बढ़ाऊंगा।

फिर मोरक्को से एक अहमदी अली शकूर साहिब अपनी बैअत की घटना लिखते हैं कि अहमदियत के परिचय के शुरुआती दिनों में जब मैं लिकाए मअल अरब नियमित देखा करता था मैंने रउया में देखा कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि रहमहुल्लाह तआला एक पहाड़ी की चोटी की ओर जाने वाले एक रास्ते पर चल रहे हैं। आप ने सफेद रंग का पाकिस्तानी वस्त्र पहना हुआ है। कहते हैं मैं हुज़ूर के पीछे पीछे चलते हुए पहाड़ी के पास पहुँच जाता हूँ। इस जगह हमें पहाड़ी के पीछे से एक तेज़ रोशनी नज़र आती है जो आसमान पर फैल जाती है और ऐसा मालूम होता है कि वह सुबह के समय की सफेदी है। कहते हैं मुझे कुछ भय महसूस होता है और मेरे कदम धीमे हो जाते हैं। कहते हैं हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि मेरे भय को महसूस करते हुए पीछे मुड़कर देखते हैं तो आपका नूर से भरा चेहरा देखकर अजीब स्थिति का सामना करता हूँ और कहता हूँ पता नहीं इस पहाड़ी के दूसरी ओर क्या है जो इस प्रकार नूर निकल रहा है तो आप मुस्कुरा कर कहते हैं। मेरे पीछे पीछे चलते रहो और डरो मत। कहते हैं अल्हम्दो लिल्लाह कि बावजूद भय और खतरों के इस रउया के अनुसार लिकाअ मअल अरब देखते हुए हुज़ूर के पीछे ही चलता रहा जब तक कि अहमदियत स्वीकार करने की मंज़िल आ गई। कहते हैं कि यूं तो मैं अहमदियत के बारे में जानने के बाद ही बैअत का फैसला कर लिया था और एम.टी. ऐ के द्वारा एक आलमी बैअत में शामिल होकर बैअत के शब्द भी दोहरा लिए थे लेकिन दिल संतुष्ट नहीं था क्योंकि बैअत के शब्द अंग्रेज़ी में थे जिनकी मुझे कोई समझ न आई थी। मुझे इस तरह बैअत करने से तसल्ली नहीं थी लेकिन मेरे निकट मूल बैअत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता पर विश्वास और बैअत की शर्तों का पालन करने की कोशिश है और मैं उसी पर प्रतिबद्ध था। फिर जब जमाअत के साथ संपर्क हुए। अल्लाह तआला ने मेरी पत्नी को भी सच्चाई को स्वीकार करने की तौफीक़ दी और फिर हम दोनों ने 2010 ई की शुरुआत में नियमित रूप से बैअत फार्म भर कर बैअत कर ली।

फिर अल्जज़ायर के एक दोस्त, डॉ हजाज़ करीम साहिब हैं वह अपनी बैअत की घटना लिखते हैं। यह वहां की जमाअत के आमला के सदस्य भी हैं और हालिया दिनों की स्थिति की वजह से वह कैद में भी रह चुके हैं। अब भी उनकी कठिन परिस्थितियां हैं अल्लाह तआला इन की कठीनाइयों को दूर फरमाए। वह कहते हैं कि मैं बिगड़ी हुई इस्लामिक शिक्षा और कुरआन की ग़लत तफसीरों से बहुत निराश था। उलमा की तफ्सीरों को सुनकर सोचता था कि क्या यह ख़ुदा तआला का कलाम हो सकता है यहाँ तक कि जॉर्डन के एक अहमदी दोस्त द्वारा अहमदियत और संस्थापक जमाअत की तहरीरों का ज्ञान हुआ। हज़रत मसीह मौऊद की तफसीर पढ़ने से पहले नफल पढ़ कर दुआ की कि अल्लाह तआला सही रास्ते पर मार्गदर्शन करे जैसे-जैसे पढ़ता गया सीना खुलता गया और कलाम के भय से शरीर पर कपकपी तारी हो गई और ईमान हो गया कि यह किसी व्यक्ति का वचन नहीं बल्कि यह इलाही वह्यी है, लेकिन बैअत का निर्णय लेने से पहले, इस्तिख़ारा किया तो ख़्वाब देखा कि मैं शहर में अपने दोस्तों के साथ रात में गुज़र रहा हूं और एक नूर हमारे साथ चल रहा है। उसी समय फोन की घंटी बजती है तो मालूम हुआ कि इस पर इमाम महदी अलैहिस्सलाम का नम्बर आ रहा है। दिल में फैसला किया कि उन्हें वापस फोन करता हूं। अगर वह फोन का जवाब नहीं देते तो वह एक सच्चे नबी होंगे वरना नहीं। न जाने मुझे ख़्वाब में मुझे क्यों लगता है कि नबी फोन का जवाब नहीं दिया करते, अत: मैंने फोन किया देर तक घन्टी बजती रही, लेकिन उन्होंने फोन न

उठाया इसके बाद आप ने मेरे सामने तेजस्वी रूप में दर्शन दिया। मैंने क़ुरआन की आयतें और आऊज़ बिल्लाह पढ़ना शुरू कर दिया ताकि कहीं शैतान मुझ पर महदी का मामला संदिग्ध न कर दे उसके बाद तीव्रता के डर से जाग उठा। यह नमाज़ फज्र का समय था मुझे विश्वास है कि यह ख़्वाब सच है और फिर मैंने बैअत कर ली।

लोगों के लिए किस प्रकार निशान प्रकट होते हैं और बैअत का साधन बन जाते हैं इस के बारे में मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब सैनेगाल एक घटना लिखते हैं। कहतें हैं कि सेनेगाल के क्षेत्र काज़मास (Cazamass) में तीन गांवों में अहमदियत का आरम्भ हुआ। इन गांवों में जमाअत की तरक्की को देख कर, विरोधी मौलवी और चीफ ने जमाअत के ख़िलाफ बद-दुआ करने का फैसला किया। वह कुरआन की तिलावत करके धरती पर हाथ मार-मार कर कहते कि अल्लाह तआला जमाअत और उसके मुबल्लिग़ को हलाक कर दे लेकिन अल्लाह तआला का करना ऐसा हुआ कि इस बद-दुआ के कुछ दिन बाद ही उनके सबसे बड़े इमाम को साँप ने काट लिया। सभी लोग फिर इकट्ठे होकर दुआ करने लगे कि अल्लाह तआला इमाम को बचा दे, परन्तु उन का यह बड़ा इमाम ख़ून की उलटियां कर के मर गया। फिर कुछ दिन बाद इस चीफ को भी ने साँप ने काट लिया जो जमाअत के ख़िलाफ बद-दुआ में शामिल था। उसे बचाने के लिए भी, मौलवियों ने दुआ की, लेकिन मृत्यु से उसे बचा नहीं सके। यह देखकर लोगों पर ख़ौफ़ तारी हुआ और ख़ुद ही कहने लग गए कि अहमदियत और अहमदी मुबल्लिग़ के ख़िलाफ बद-दुआ के परिणाम में ऐसा हो रहा है लेकिन मौलवियों ने कहना शुरू कर दिया कि यह सब अल्लाह तआला नहीं कर रहा बल्कि जिन्न ने साँप छोड़ा हुआ है और वह लोगों की हत्या कर रहा है अभी कुछ दिन ही हुए थे कि नायब चीफ को भी साँप ने काट लिया और वह भी इसी स्थिति से गुज़रते हुए हलाक हुआ। इसके बाद लोग हमारे मुबल्लिग़ के पास आए और हमारे मुबल्लिग़ को नहीं पता था कि इस तरह इन लोगों ने जमाअत के ख़िलाफ बद-दुआ की है लेकिन गांव वालों ने ख़ुद इस पूरी घटना को वर्णन किया और कहा कि हमें बचाओ हमें हमारी बद-दुआ ने हमें पकड़ लिया है। हमारे लिए कुछ करो अत: मुबल्लिग़ उन के गांव गए और हज़रत मसीह मौऊद की इस घोषणा के बारे में उन्हें बताया कि ख़ुदा तआला दुश्मनों की बुराई को नष्ट करेगा और जमाअत को तरक्की देगा और अब अल्लाह तआला के फज़ल से तीनों गांव के सात सौ से अधिक लोग बैअत कर के अहमदियत में शामिल हो गए हैं।

विरोधी ख़ुद भी कई बार नेक प्रकृति लोगों के लिए सच्चे अनुसंधान का रास्ते खोल देते हैं। एक घटना का ज़िक्र करते हुए बुर्किना फासो के क्षेत्र गोरोमो से मुअल्लिम सिलिसला लिखते हैं कि हमारी एक जमाअत पूरा(Poura) के वहाबी इमाम के बेटे ने एक मिशनरी वार्तालाप में भाग लिया जिसमें उन्होंने देखा कि ग़ैर अहमदी मौलवी, जिन्होंने पी.एच डी भी कर रखी थी दलीलें देने के स्थान पर, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी कर रहे थे। इस बात का उस लड़के पर बड़ा असर हुआ और उसने जमाअत के बारे में जांच शुरू कर दी। रेडियो पर जमाअत की नियमित तब्लीग़ सुनता रहा एक दिन अपने पिता(जो कि वहाबी इमाम हैं) से जमाअत के बारे में पूछा तो पिता ने जवाब दिया कि अहमदी मुसलमान नहीं हैं तुम उनके पास न जाना लेकिन महोदय नियमित रेडियो सुनते रहे। फिर उन्होंने हमारे मुअल्लिम से संपर्क किया और बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शामिल हो गए। जब पिता को इस बारे में पता चला, तो उसने अपने बेटे को अपने घर से बाहर निकाला। कुछ दिन बाद, लड़के को अपनी मां का फोन आया कि तुम्हारे जाने के बाद, घर की शांति और अमन बर्बाद हो गया है। वापस आओ और अपने पिता से सुलह कर लो। जब उसने अपनी मां के कहने पर वह वापस आया तो उसने देखा कि पिता ने सभी ग्रामीणों को इकट्ठा किया और कहा कि यह मेरा बेटा नहीं है, यह काफिर है। अफ्रीकी परंपरा के अनुसार पिता का नाराज़ होना बहुत बुरा होता है। इस पर नौ अहमदी बेटे को काफी परेशानी हुई वह दुआ में लग गया तो एक दिन ख़्वाब में देखा कि कोई व्यक्ति कह रहा है कि अगर मुक्ति चाहते हो तो अहमदियत पर कायम रहो। इस ख़्वाब से, उन्हें और अधिक दृढ़ता प्राप्त हुई और अपने पिता से कहा कि आप जो चाहे कर लें अब मैं अहमदियत नहीं छोड़ सकता। अत: हज़ारों मील दूर रहने वालों के दिलों में भी अल्लाह तआला अहमदियत को मज़बूत कर देता है और फिर उन्हें दृढ़ता भी प्रदान करता है।

अल्लाह तआला ने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के द्वारा जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बहुत प्यार करने वालों का समूह पैदा किया है। वहाँ आपस में मुहब्बत भी दिलों में पैदा कर दी है। अत: इस प्यार की घटनाओं का ज़िक्र करते हुए अमीर साहिब बेनिन लिखते हैं कि पारकोआ क्षेत्र में एक शहर है काले। यह पारकोवा शहर से 114 किलोमीटर दूर है, कच्चे रास्ते हैं इन से गुज़रते हुए और जंगलों में से गुज़रते हुए बिल्कुल जंगल में है। कहते हैं हम पिछले साल इस गांव में गए थे। पिछले साल इस गांव में बैअतें भी हुई थीं। इस वर्ष, पेड़ों की छाया के नीचे जलसा का आयोजन किया गया था, जहां सभी जमाअतों के नए अहमदियों को बुलाया गया था। जब केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल एक लंबी और कठिन यात्रा करके इस गांव पहुंचा तो गांव के लोगों ने नारे लगाते हुए इतने जोश से स्वागत किया कि गांव वालों की ईमानदारी देखकर सारी यात्रा की थकान दूर हो गई।

कहते हैं कि एक जमाअत मकारा (Makara) के नौमुबाईन सदर जमाअत ने,अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि लोगो यह सच्चा रास्ता है जिसने हमें ज़िन्दगी दी। यही वास्तविक धर्म इस्लाम है, जिसने हमें प्यार सिखाया। ग़ैर अहमदी इमाम ने हमारे मध्य प्यार को खत्म करने की कोशिश की, परन्तु अहमदियत ने हमें एकजुट किया है।

इसी तरह, एक नए अहमदी जमाअत डोरो(Doru) के सदर ने कहा कि अहमदियत ने ही हमें इस्लाम सिखाया है। जब हम सालाना जलसा पर गए तो किसी ने कोई अन्तर नहीं किया। सब गांव वाले और शहर वाले एक ही स्थान पर जमा थे न कोई लड़ाई थी न झगड़ा। अहमदियत ने हमें धर्म की समझ दी और अल्लाह तआला ने हम पर फज़ल किया कि हम लोग नमाज़ें पढ़ने लगे। फिर एक नए अहमदी ने कहा कि हम अहमदियत का धन्यवाद करते हैं कि हम जंगल वालों को इन्सान बनाया है। यहां बेटा बाप को सलाम नहीं करता था, लेकिन अहमदी मुसलमान और मुबल्लिग़ ने हमें प्रशिक्षित किया कि हर तरफ से सलाम की आवाज़ें आती हैं।

अल्लाह तआला मुसलमानों में भी और ग़ैर-मुसलमानों में भी किस प्रकार नेक फितरत लोगों को अहमदियत स्वीकार करने की बाद फिर ईमान में मज़बूती प्रदान करता है।

सिएरा लियोन की अमीर साहिब लिखते हैं कि बो क्षेत्र सिएरा लियोन की एक जमाअत सेल्वा(Sellu) में पिछले साल एक नई जमाअत की स्थापना हुई थी लेकिन वहां के इमाम ने उस समय बैअत नहीं की थी। कुछ समय पहले, जब इमाम ने जमाअत में शामिल होने की घोषणा की तो कुछ बुराई फैलाने वाले वहां पहुंच गए। इन लोगों ने वहां जाकर इमाम से कहा कि चूंकि यह मस्जिद जिस की आप इमामत करते हो मालकिया फिर्का की है इसलिए या तो अहमदियत छोड़ दो या फिर मस्जिद की इमामत छोड़ दो। इस पर इमाम साहिब ने जवाब दिया कि मैंने एक लंबे समय तक व्यक्तिगत अनुसंधान और अध्ययन के बाद अहमदियत स्वीकार की है और चूंकि मैं इमाम हूं और उन बातों को अपने लोगों से बेहतर समझ सकता हूँ इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि अहमदियत ही वास्तविक इस्लाम है और में आप की मस्जिद और इमामत आप को सौंपता हूँ लेकिन अहमदियत छोड़ना मेरे लिए संभव नहीं।

ऐसे इमाम भी हैं जो आलिम हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने सच्चाई और समझ का ज्ञान भी दिया है। एक पाकिस्तानी उलमा हैं, जिनका केवल अपना स्वार्थ है और अपने पेट को भरने पर ध्यान है।

बेनिन के एक स्थानीय मुअल्लिम तौफीक साहिब लिखते हैं कि एक दोस्त बामैसूर (Bamesoro) करीम साहिब ने ईसाई धर्म से अहमदियत को स्वीकार किया। महोदय ने हमें अपने गांव हैती में तब्लीग़ के लिए आने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि चाहे पूरे गांव में कोई भी स्वीकार न करे और चाहे लोग मेरा कितना ही विरोध क्यों न करें मैं अहमदी हूँ और अहमदी ही रहूंगा और अकेला ही तब्लीग़ करता रहूंगा। यह नए अहमिदयों की तब्लीग़ का जोश है इस में हम पुरानों के लिए एक शिक्षा है। जब उनके गांव में तब्लीग़ की, बीस लोगों को बैअत करने की तौफीक़ मिली। कुछ समय बाद जामिया अहमदिया नाइजीरिया के एक छात्र बशीर साहिब को वहां प्रशिक्षण के लिए भेजा गया, 100 से ज्यादा लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया। अहमदियत की बढ़ती संख्या को देख कर इमाम मस्जिद ने जमाअत का विरोध शुरू कर दिया और दैनिक तड़के जमाअत के ख़िलाफ उपदेश शुरू कर दिया लेकिन अहमदी दृढ़ रहे और गांव के पहले अहमदी बामैसूर करीम साहिब ने कहा कि जब तक इस गांव में जमाअत को मस्जिद के लिए जगह नहीं मिल जाती तब तक मेरा घर जमाअत के लिए मौजूद है। अल्लाह तआला की कृपा से, अहमिदयों ने वहां पर जुम्अ: की नमाज़ भी अदा की और ईद की नमाज़ भी अदा की। इमाम मस्जिद ने देखा कि अहमदियत हर दिन तरक्की कर रही है और फिर वह बामैसूर करीम साहिब के घर चला गया और उसे काफिर कहना शुरू कर दिया। इस पर करीम साहिब ने कहा, जब मैं एक ईसाई था, तुम में से किसी ने मुझे

इस्लाम का संदेश नहीं दिया अब जब मैं जमाअत अहमदयिा की वजह से मुसलमान हूँ, तो तुम ने मुझे एक काफिर कहना शुरू कर दिया। मैं अहमदी हूं और अहमदी ही मरूंगा, अत: मौलवी को वहां से अपमानित हो कर निकलना पड़ा और करीम साहिब एक उत्साहित दाई इलल्लाह बन चुके हैं। उन्हें तब्लीग़ का बड़ा शोक है बवाजूद इमाम मस्जिद के विरोध के, बड़े जोश और उत्साह के साथ तब्लीग़ कर रहे हैं और नई बैअतों को प्राप्त करने का माध्यम बन रहे हैं।

बुर्किना फासो से स्थानीय मुअल्लिम कोनाते अब्दुल हई साहिब कहते हैं कि एक नए अहमदी जियालो (Doalo) इब्राहीम ने बताया कि वह मुसलमान होने के बावजूद अक्सर शराब पीया करता था और इतनी अधिक पीता था कि लोग उन्हें पागल समझते थे और कोई भी उनके पास नहीं जाता था। एक दिन वह बीमार हो गया और कोई भी उससे मिलने नहीं आया। फिर उसने अहमदिया रेडियो सुनना शुरू कर दिया और अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत दी। जमाअत में प्रवेश कर गए और शराब पीना छोड़ दी लेकिन कुछ समय बाद फिर से बीमार हो गए और इस बार इतने बीमार हुए कि उन्होंने समझ लिया कि मेरा अंतिम समय आ गया है इसलिए महोदय ने दुआ की कि हे अल्लाह अगर इमाम महदी जिन को मैंने स्वीकार किया है कि यदि आप सच्चे हैं, तो मुझे लंबा जीवन दे। अल्लाह तआला ने उन की दुआ स्वीकार की। कहते हैं कि अल्लाह ने न केवल उन्हें रोग से बचा लिया बल्कि उन्हें स्वास्थ्य भी दिया ताकि वह जलसा में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि यह इमाम महदी की बरकत है अगर वह आज जीवित हैं तो सिर्फ इस लिए कि उन्होंने सच्चाई को स्वीकार किया।

आइवरी कोस्ट से एक दोस्त दमीले (Demble) साहिब अपनी अहमदियत स्वीकार करने की घटना बताते हुए कहते हैं कि मूर्तियों की पूजा करता था एक दिन मैंने ख़्वाब में देखा कि एक बूढ़ी औरत मुझे एक लोटा और जाए नमाज़ देती है और कहती है कि नमाज़ पढ़ा करो मुझे इस ख़्वाब की समझ नहीं आई। मैं ख़्वाब का अर्थ जानने के लिए एक मुस्लिम आलिम के पास गया। उन्होंने कहा कि सीधा अर्थ है कि तुम नमाज़ पढ़ा करो। अत: मैंने ग़ैर-अहमिदयों की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया, लेकिन फिर भी मेरा ध्यान मूर्ति पूजा की ओर था। कुछ दिनों बाद मैंने उस महिला को फिर से ख़्वाब में देखा उस ने फिर मुझे कहा कि तुम नमाज़ पढ़ा करो। कहते हैं कि मैं चिंतित हो गया कि मैंने नमाज़ पढ़ना तो शुरू कर दिया है, तो इस ख़्वाब का क्या अर्थ है? इस पर कहते हैं मैं अपने बड़े भाई के पास गया जो अहमदी था और इससे ख़्वाब वर्णन किया। बड़े भाई ने मुझे बताया कि इसका अर्थ है कि तुम्हें अहमदियत को स्वीकार कर लेना चाहिए, इसलिए समूह के निमंत्रण से परामर्श करके मैंने जमाअत के बारे में जानकारी ली। बैअत से पहले भी मैं नमाज़ पढ़ता था लेकिन इसके बावजूद मेरा दिल बुतपरस्ती की तरफ झुकता रहता था लेकिन अहमदियत स्वीकार करने की बरकत थी कि मेरे दिल से बुतपरस्ती का विचार बिल्कुल ही निकल गया। अहमदियत को स्वीकार करने के बाद, मुझे असली नमाज़ मिली और मुझे सच्चा ख़ुदा तआला मिला। इसलिए नए अहमदियों की यह घटनाएं पुराने अहमिदयों के लिए शिक्षा हैं।

काज़ान से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि जून 2014 ई से काज़ान जमाअत ने फरीद इब्राहीम साहिब की दुकान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर लगाई। तस्वीर के नीचे रूसी भाषा में यह लिखा कि इमाम महदी जिस का बहुत देर से इंतज़ार था वह आ चुका और जमाअत की वेबसाइट का पता भी साथ ही लिखा गया था। उनकी दुकान शहर के मुख्य बाज़ार में है और अनुमानित 10,000 के लगभग लोग उनकी दुकानों के निकट से रोज़ाना गुज़रते हैं। इस तस्वीर को देख कर लोग संपर्क करते हैं और तब्लीग़ करने का रास्ता मिलता है। इस तरह भी लोगों से तब्लीग़ के रास्ते खोलना शुरू होते हैं पिछले दिनों, एक पाकिस्तानी अहमदी अपने कारोबार के लिए हमारे पास गए हुए थे। मेरा विचार है यही जगह होगी जहां उसने एक तस्वीर मुझे भेजी थी। एक दुकान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी सारी तस्वीर थी और कहते हैं मैं वहां खड़ा हो गया। तस्वीर देख रहा था इतने में दो पाकिस्तानी ग़ैर अहमदी आ गए तो एक दूसरे को कहने लगा कि लगता है कि यह कादियान वाले मिर्ज़ा साहिब हैं इन की तस्वीर है। एक औरत जो इस दुकान पर थी उस ने सिर्फ इतना सुना। तो तस्वीर की तरफ इशारा कर के कहा कि कि यह इमाम महदी अलैहिस्सलाम हैं जो आ गए हैं। कहते हैं मैंने इतना ही सुना था फिर वहां से चला गया। अत: तब्लीग़ के यह रास्ते इस प्रकार भी लोग खोलते हैं।

अमीर साहिब बुर्किना फासो लिखते हैं कि हमारे एक नए अहमदी दोस्त पारे (Pare) इदरीस ने कहा कि मैंने बैअत करने के बाद एक दिन ख़्वाब में देखा कि जिस जगह में पहले होता था। वहाँ अंधेरा हो गया है और जिस जगह अब हूँ वहाँ नूर ही नूर है। वह कहते हैं कि उसके बाद मेरी आँख खुला गई। महोदय अहमदियत स्वीकार करने से पहले वहाबी थे तो इस ख़्वाब के बाद उन्होंने अपने मित्रों को कहना शुरू कर दिया कि अगर आज आप नूर तलाश करना चाहते हो तो वास्तविक नूर केवल अहमदियत में ही है क्योंकि इसमें ख़िलाफत की प्रणाली जारी है और ख़िलाफत के साथ हमारी जीत है अल्लाह तआला की कृपा से, अब पारे साहिब स्थायी दाई इलल्लाह बन चुके हैं बहुत तब्लीग़ करते हैं।

अत: अल्लाह तआला लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा की ओर ला रहा है और इंशा अल्लाह एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा ही वास्तविक इस्लाम दुनिया में विजयी होगा। अल्लाह तआला प्रत्येक को तौफीक़ दे कि वह इस बरकत से हिस्सा लेने के लिए स्थायी दावत इलल्लाह करने वाला हो और इस ओर ध्यान दे।

नमाज़ के बाद दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। एक नमाज़ जनाज़ा अदरणीया ख़ुर्शीद रुक़य्या साहिबा का है जो आदरणीय मौलवी मंज़ूर अहमद साहिब घनौके मुहूम दरवेश कादियान की पत्नी थी। 1 सितंबर, 2017 को, हार्ट अटैक से जुम्अ: और हज्जे अकबर के दिन वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मिर्ज़ा कबीरुद्दीन साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पड़ नवासी थीं। आप के पति देहाती मुबल्लिग़ थे, जिनके साथ आप की 1 9 56 ई में शादी हुई थी। तब्लीग़ के मैदान में प्रत्येक प्रकार का कष्ट तंगी और कठिन स्थितियों में अपने पति का पूरा साथ दिया। बहुत धीरज के साथ जीवन गुज़ारा। मरहूमा नमाज़ों की पाबन्द, दुआ करने वाली, मेहमान नवाज़, ख़िलाफत की फिदाई, ग़रीबों का ध्यान रखने वाली और नेक ख़ातून थीं। एम.टी.ए पर नियमित मेरे खुत्बे सुना करती थीं। और अपने बच्चों को भी यह कहती थीं कि मेरे ख़ुत्बे सुना करो। लंबे समय तक यह बीमार भी रहीं और जमाअत के द्वारा इलाज की सहूलत उपलब्ध होने पर भी यह सहायता नहीं लेतीं थीं। अंतिम समय तक बच्चों को यही कहा कि अपने संसाधनों से ही अधिक से अधिक इलाज करवाने की कोशिश करो। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटियां और दो पुत्र छोड़े हैं। इन के एक दामाद जो हैं वह फ्रांस में रहते हैं। वह मोरक्को के रहने वाले हैं। अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर उंचे करे और उन की औलाद को भी नेकियों को जारी रखने की तौफीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा है डॉ सलाहुद्दीन साहिब न्यू जर्सी अमेरिका का, जो मौलवी इमामुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ सिलिसला इन्डोनेशियो के बेटे था। 10 सितंबर, 2017 को, वह हार्ट अटैक से वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप ने वहीं यूनिवर्सिटी में किसी साईंस के विषय पर पी एच डी किया था। छुट्टियों में लंदन भी आते जाते रहे। खिलाफते राबिया में अधिक आया करते थे और दफ्तर पी एस के अतिरिक्त सुरक्षा में भी डियोटियां दिया करते थे। हमेशा बड़ी ज़िम्मेदारी के साथ अपनी ड्यूटी दिया करते थे उन का व्यक्तित्व ऐसा स्पष्ट और लोकप्रिय था कि शीघ्र ही लोगों में अपना स्थान बना लेते थे। कद भी उन का लंबा था फिर ज्ञान भी पर्याप्त था। पी.एच.डी की हुई थी और ज्ञान से ख़ूब परिचित थे। इसके अलावा भी ज्ञान रखते थे। इन गुणों के बावजूद, बहुत विनम्र और नर्म दिल थे। हर तरह के आदमी से बात करने का पता था जैसा कि मैंने कहा कि ख़िलाफत राबिया में तो विशेष रूप से काफी लंबा समय निजी सचिव कार्यालय में सेवा की तौफ़ीक़ पाई फिर स्टाफ सुरक्षा की डयूटयों में भी पर्याप्त फुर्ती से ड्यूटी देते रहे।

अमीर साहिब अमरीका उनके बारे में लिखते हैं कि डॉ सलाहुद्द्दीन न्यू जर्सी जमाअत के सदस्य थे। दशकों तक, जलसा सालाना के अवसर पर लंगर ख़ाना में स्वयं सेवकों की टीम की निगरानी करते रहे। जलसा सालाना के अवसर पर, उनकी अनथक और निरन्तर सेवा हम सभी के लिए एक नमूना थी। आगे हो कर काम करने के स्थान पर बेनफ्स हो कर मेहमानों की जोश से सेवा के लिए तैयार रहते थे, और कहा करते थे कि मुझे ओहदा कोई नहीं चाहिए केवल सेवा जो लेनी है ले लें। ख़िलाफत से भी बहुत अधिक वफा का सम्बन्ध था। मैं उन को बचपन से रब्वा से जानता हूं और खिलाफत के साथ भी मैंने एक वफा का सम्बन्ध देखा है। अल्लाह तआला इन के स्तर ऊंचा करे। इन की शादी नहीं हुई था। इनकी जो बहने हैं उन को भी धैर्य की तौफीक़ प्रदान फरमाए और मौलवी इमाम दीन साहिब की जो औलाद है उन में इन नेकियों को भी जारी फरमाए।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -14)

वाक्फाते नौ(लजना) की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ कक्षा, और मज्लिस सवाल तथा जवाब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अप्रैल 2017 (दिन रविवार) (शेष....)

*इसी वक्फे नौ ख़ादिम ने निवेदन किया कि हदीस में आया कि तीन जुम्अ: न पढ़ने से दिल काला हो जाता है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कोशिश करें कि आप एक दो जुम्ओं के बाद एक जुम्अ: ज़रूर पढ़ें। कई बार अपने कार्यस्थलों पर कह सकते हैं कि मुझे इतने समय की छुट्टी दे दो। तो अक्सर employers और मालिक छुट्टी दे भी देते हैं। लेकिन जहां मजबूरी है वहाँ अल्लाह तआला का रहम भी बहुत व्यापक है। अल्लाह तआला ने यह एक सैद्धांतिक बात बताई है। अगर वास्तविक मजबूरी है तो व्यक्ति इससे exempt हो जाता है। अल्लाह तआला फिर माफ कर देता है। लेकिन ऐसी बातों को बहाना नहीं बनाना चाहिए।

*एक वक्फे नौ ख़ादिम ने निवेदन किया कि मेरा सवाल organ donation के बारे में है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: Organs की डोनेशन हो सकती है। मरने के बाद लोग आँखों का दान देते हैं, गुर्दे देते हैं बल्कि कुछ जीवन में ही गुर्दे देते हैं या कुछ और चीज़ें कर देते हैं। जो बात मानवता की भलाई के लिए हो सकती है और जो कुर्बानी देने के लिए तैयार है तो इसमें कोई हर्ज नहीं है।

उस पर इस ख़ादिम ने निवेदन किया कि उस पर कुछ आपत्ति जताते हैं कि मृत्यु के बाद ब्रेन dead होता लेकिन organs तो जीवित होते हैं। इसलिए आत्मा को चोट हो सकती है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सवाल है कि जब अपने जीवन में कोई गुर्दा निकाल कर देता। कई लोग अपने गुर्दे अपने रिश्तेदारों को दे देते हैं ... ग़रीब देशों में कुछ ग़रीब बेचारे अपने गुर्दे बेच देते हैं। भारत, पाकिस्तान में लोग अपने गुर्दे बेच देते हैं। तो ऐसे लोग अपने जीवन में ही कर रहे हैं। मूल बात यह है कि ऐसे अंग काम तो तभी आएंगे जब उन से लाभ हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यहाँ रूह का तो सवाल ही नहीं है। मरने के बाद रूह का शरीर से कोई संबंध ही नहीं है। जब डॉक्टर ने वास्तव में घोषित कर दिया कि इंसान मर गया है तो कुछ समय के बाद तक कुछ चीज़ें हरकत करती रहती हैं। इस समय के दौरान अगर आंख निकाल ली या कोई ऐसा organ निकाल लिया जो दूसरे को लाभ पहुँचा सकता है तो पहुंचा दो। Ultimately तो सारी चीज़ों ने मर ही जाना है। दिमाग़ अगर dead हो गया तो कुछ देर बाद दूसरे organs ने भी खत्म हो जाना है। तो क्यों न इन organs को समाप्त होने से पहले किसी इंसान की जान बचाने के लिए उपयोग कर लिया जाए? तो जो लोग इस पर आपत्ति जताते हैं ग़लत करते है।

*एक वक्फे नौ ख़ादिम ने निवेदन किया कि मेरी एक वाकफह नौ बेटी भी है। पिता की स्थिति हमें अपने वाक़फीन नौ बच्चों का किस तरह ख्याल रखना चाहिए?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहले तो ख़ुद नमाज़ें पढ़ें और दुआ करें कि अल्लाह तआला आप का भी सुधार करे और वास्तविक वक्फे नौ बनाए बच्चों को भी सही प्रशिक्षण करने वाला बनाए ताकि आप उन्हें देश व राष्ट्र और जमाअत के लिए एक अच्छा asset बना सकें।

*एक वक्फ नौ ने निवेदन किया कि सूफियों का कथन है कि मोमिन एक पक्षी की तरह होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया कि मोमिन इस दुनिया में तो होता लेकिन दूसरी दुनिया में नहीं होता। मेरा सवाल यह है कि हमें कैसे पता लग सकता कि हम दुनिया की ओर अधिक जा रहे हैं और अध्यात्म से दूर जा रहे हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप को इतनी मोटी बात भी पता नहीं लगती? यदि आप फिक्र के साथ पांच बार जमाअत या समय पर नमाज़ें अदा करने की तरफ ध्यान पैदा नहीं होता, अगर आप को फिक्र के साथ नफिल पढ़ने की ओर ध्यान पैदा नहीं होती, अगर चिंता के साथ बन्दों के अधिकार अदा करने की तरफ ध्यान नहीं होता, अगर हर वक़्त मन में यह विचार नहीं रहता कि अल्लाह तआला मुझे देख रहा और कोई ग़लत काम न करूँ तो इसका मतलब है कि आप अल्लाह तआला ओर कम जा रहे हैं और दुनिया की ओर अधिक जा रहे हैं। यह तो आपको ख़ुद जायज़ा लें। आप धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के लिए एक वादा किया है। सूफियों की बात तो बाद की है, धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के लिए जो नियम है उसे देखें और ख़ुद समीक्षा करें कि क्या आप इस पर पूरा उतर रहे हैं? क्या आप अल्लाह तआला की इबादत का हक निभा रहे हैं? क्या आप हर रोज़ का जो कर्म है वह इस शिक्षा के अनुसार है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ने दी है? यह तो आदमी स्वयं समीक्षा कर सकता सकता। गुणवत्ता तो कुरआन ने निर्धारित कर दी है और गुणवत्ता तो आपके सामने है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह कोई हिसाब का सवाल नहीं है। एक जमा एक दो ही होगा। यहां के लोगों को आदत पड़ गई है हम इस तरह का सवाल करेंगे तो ऐसा जवाब मिल जाएगा। कुछ सवालों के जवाब इस तरह नहीं होते। आध्यात्मिकता का मामला अलग है। रूहानियत के लिए पहली बात अल्लाह तआला से संबंध है। इस बात की समीक्षा करें कि वह संबंध है? मैं तो आप की रूहानियता को जज नहीं कर सकता। यह तो आप ख़ुद कर सकते हैं।

*इसी सेवक ने निवेदन किया कि यह दुनिया एक illusion है। हम कभी कभी बहुत छोटी चीजों को बहुत बड़ा बना लेते हैं। हालांकि वास्तविक जीवन तो इस के बाद आना है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस में illusion वाली क्या बात है? दुनिया तो आप के सामने दिखायी दे रही है। आप छोटी चीजों को बहुत बड़ा इसलिए कर देते हैं कि दुनिया तो आपके सामने है और आप को दिख रही है जबकि ग़ैब का ज्ञान आप को नहीं है और अल्लाह तआला पर जो विश्वास होना चाहिए वह पूरा नहीं है उसी लिए दुनिया की ओर प्रवृत्ति अर्थात जो कुछ सामने दिखाई दे रहा है समझते हैं कि वास्तविक है। अगर यह गौर तलब है कि मरने के बाद जो जीवन है वह अनन्त जीवन है और अल्लाह तआला ने हम से हिसाब लेना है और अल्लाह तआला हमारे हर काम और कर्म को देख रहा तो फिर इंसान इस दुनिया जीवन में भी अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार जीने की कोशिश करेंगे। क्योंकि जो दुनिया का जीवन है उसी का फल अगले जहान में मिलना है। कुरआं करीम ने जो दो जन्नतों की कल्पना दी है वह यही है। यह दुनिया भी जन्नत बनाओ और वह उसी तरह बनेगी कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की आज्ञाओं पर अनुकरण करो और अल्लाह तआला के जो अधिकार हैं वह अदा करो और जो बन्दा के जो अधिकार हैं वह निभाओ। तो अगले जहान में अल्लाह तआला इसका reward देगा। तो यह सब कल्पना की बात है। आप इस दुनिया को इस लिए बड़ा समझते हैं कि सामने दिखायी दे रही है। एक उदाहरण बनी हुई है कि एक आदमी ने किसी के बारे में बात की। जब उस व्यक्ति को पता चला जिस के ख़िलाफ बात की थी तो उसने पूछा कि यह बात क्यों की है? वह व्यक्ति कहने लगा कि जो बात थी वह मैंने सच सच बता दी है। मैंने अल्लाह तआला को जान देनी है क्यों ग़लत बात करूं। उस पर जिसके ख़िलाफ बात की थी

उस ने दूसरे को पकड़ लिया और उस पर मुक्का कस कर कहने लगा अब बताओ यह मुक्का निकट है या अल्लाह तआला निकट है? पंजाबी में कहते हैं "कसुहन नीढ़े कि अल्लाह नीढ़े?" तो जब कसहन (मुक्का) नीढ़े हो तो अल्लाह तआला भूल जाता है। यही हाल दुनिया का है।

*इस के बाद एक वक्फे नौ ख़ादिम ने निवेदन किया कि मेरा सवाल उन वाक़फीन नौ के बारे में है जो पाकिस्तान से यहां आते हैं। इनमें से कुछ ने जामिया में कुछ समय अध्ययन और किसी वजह से पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। उनके विषय में क्या हिदायत है? वह कैसे जमाअत के लिए उपयोगी अस्तित्व बन सकते हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: उनके बारे वही नुस्खा है जो अभी हसनात साहिब ने यहां तकरीर की है कि वे वाक़फीन नौ जो नियमित जमाअत की नौकरी या जमाअत payroll पर नहीं हैं वे भी अपने आप को समर्पित समझें और सेवा करें। यहाँ तब्लीग़ का मैदान खुला है। तब्लीग़ करें। अपने तब्लीग़ के क्षेत्र को व्यापक करें। एक बार जाकर लीफ लेट दे देना या सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया या सैक्रेटरी तब्लीग़ से रिपोर्ट आ जाना कि इतने लाख लीफ लेट बांट दिए केवल यही तब्लीग़ नहीं है। कल या परसों यही सोच रहा था कि हम लाखों तो बांट देते हैं लेकिन देखने की बात यह है कि यहाँ जर्मनी में जो तीस हज़ार अहमदियों की आबादी है उसमें से कितने लोग हैं जो लीफ लेट बांट रहे हैं? जैसे यहां जर्मनी में साढ़े तीन हज़ार वाक़फीन नौ लड़के हैं। अगर हर लड़का तब्लीग़ मैदान में involve हो और बरोशरज़ बांटने के साथ-साथ निजी संपर्क और तब्लीग़ कर रहा होता तो बहुत काम कर सकते हैं। यह बड़ा व्यापक कार्य क्षेत्र है। नए नए तरीके explore करना और नए नए रास्ते निकालना यह तो लोगों के काम हैं। केवल यह कह देना कि केवल जमाअत payroll पर आकर ही सेवा हो सकती है तो जमाअत तो इस समय प्रत्येक को ले नहीं सकती। वैसे भी अगर किसी ने पाकिस्तान में जामिया में शिक्षा पूरी नहीं की या जामिया छोड़ दिया वह किसी कारण से ही छोड़ा होगा और इसके बाद यहाँ आ गए तो किसी कारण से ही आए होंगे। अब यहां आकर आप स्वतंत्र है, अपने वित्तीय स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर हैं। पाकिस्तान की तुलना में यहां धार्मिक स्वतंत्रता सौ प्रतिशत अधिक है और विभिन्न प्रकार की दूसरी सुविधाएं भी हैं उनसे लाभ लें और जमाअत के काम करें।

वाक़फीन नौ ख़ुद्दाम की यह कक्षा साढ़े बारा बजे तक जारी रही।

वाक्फाते नौ के साथ कक्षा

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार कार्यक्रम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ प्रोग्राम शुरू हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ कुरआन की तिलावत के साथ शुरू किया गया था, जिसे अज़ीज़ा तनज़ील्ला ख़ालिद साहिब ने पढ़ा और उर्दू अनुवाद अज़ीज़ा नबीला साहिबा की पेशकश किया।

इसके बाद अज़ीज़ा मलीहा नासिर साहिबा ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस का अरबी भाग प्रस्तुत किया और अज़ीज़ी वजीहा नाज़िश साहिबा ने इस हदीस का नीचे लिखा अनुवाद प्रस्तुत किया: " हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला! तुम्हारे जिस्मों को नहीं देखता और न ही तुम्हारी सूरतों को(कि वह सुन्दर हैं या बदसूरत) बल्कि वह तुम्हारे दिलों को देखता है (कि उनमें कितनी ईमानदारी और नेक इरादा है)।"

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिला)

उसके बाद अज़ीज़ा ताहिरा अहमद साहिबा ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निम्न लिखित उद्धरण पेश किया हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "ख़ुदा तआला का भय इसी में है कि व्यक्ति देखे कि उसका कथनी और करनी कहाँ तक एक दूसरे के साथ समानता रखती है। फिर जब वह देखे कि उसकी कथनी और करनी में समता नहीं हैं, तो समझें कि अल्लाह का ग़ज़ब वाला। जो दिल नापाक है, चाहे कथन कितना है पवित्र हो। वह दिल ख़ुदा तआला की दृष्टि में मूल्य नहीं पाता, बल्कि ख़ुदा तआला का क्रोध भड़केगा। अत: मेरी जमाअत समझ ले कि वे मेरे पास आए हैं, इसलिए कि बाज लगाए जाएं और फलदायी पेड़ हो जांए। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी आंतरिक स्थिति के बारे में सोचे और उसकी आंतरिक स्थिति कैसी है? अगर हमारी जमाअत ऐसी बात का शिकार है कि उसकी ज़बान पर कुछ है और उसके दिल में कुछ है तो अंत में अंजाम अच्छा नहीं होगा। जब अल्लाह तआला देखता है कि एक समूह दिल से खाली है, केवल मौखिक दावे करते हैं कि वह ग़नी है, उसे परवाह नहीं है। बदर की जीत की भविष्यवाणी हो चुकी थी, हर तरह से विजय की आशा थी, लेकिन फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी रो रो कर दुआ मांगते थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीकी रज़ि ने निवेदन किया कि जब प्रत्येक रूप से जीत का वादा है, तब रोने की क्या आवश्यकता है? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वह ग़नी हस्ती है संभव है कि अल्लाह के वादा में कोई शर्तें छुपी हुई हों।"

(मल्फूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 8)

इस के बाद, अज़ीज़ा समीना ज़फर साहिबा ने हज़रत मुस्लेह मौऊद की नज़्म

अहदे शिक्नी न करो अहले वफा हो जाओ
अहदे शैतां न बना अहले ख़ुदा हो जाओ

में से कुछ चुने हुए शेर पढ़े

इसके बाद अज़ीज़ा अफीफा अहमद, अज़ीज़ा सादिया नसीर, अज़ीज़ा सदफ नफीस और अज़ीज़ा मंसूरा हिना ने वाकफ़ात नौ की जिम्मेदारियां शीर्षक पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ की हिदायतें पेश कीं। अज़ीज़ा मंसुरा का भाषण इस प्रकार है:

वाक्फाते नौ की ज़िम्मेदारियां

सय्यदी प्यारे आक़ा अय्यदकुमुल्लाह तआला बानस्रेहिल अज़ीज़, ख़ुदा तआला के फज़ल से आज इस कक्षा में ऐसी वाकफ़ात नौ को शामिल होने का सौभाग्य हासिल हो रहा है जो कि अपनी पढ़ाई पूरी होने के बाद फिर से वक्फ का नवीकरण करके इस बात का वादा कर चुकी हैं कि वह ख़ुदा तआला के धर्म सेवा के लिए हमेशा आगे रहेंगे। हमारा सौभाग्य है कि हमारे माता-पिता ने इस रंग में हमें धर्म की सेवा के लिए प्रस्तुत किया है और हमारा प्रशिक्षण इस तरीके से किया है कि जो आज हम समय के ख़लीफा की सेवा के लिए ख़ुद को पेश कर रही हैं। प्यारे आक़ा से दुआ है कि ख़ुदा तआला हमारी ओर हमारे माता-पिता की इस कुरबानी को स्वीकार करे और हमें ख़ुदा तआला की सर्वोत्तम सेवा करने की तौफीक फरमाता चला जाए। आमीन

मेरी वाक्फाते नौ बहनो! यह हमारा भाग्य है कि हमें हमारे बचपन के समय का ख़लीफाओं के मार्ग दर्शन में फलने फूलने का अवसर मिला है। प्यारे आका ने उम्र के हर मोड़ पर हमारा प्रशिक्षण और मार्गदर्शन किया। जैसा कि 2012 के जलसा सालाना यू.के के अवसर पर आप ने फरमाया: " आप में से बहुत सारी वाकफ़ात नौ यौवन की उम्र तक पहुँच चुकी हैं और इस तरह ख़ुद उस वादा को जारी रखने का वादा किया है जो आप के माता-पिता ने आप के जन्म से पहले किया था। आप सब को यह याद रखना चाहिए कि अंतत: वही जीवन सफल समझना चाहिए जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने में गुज़ारी जाती है। अक वाक्फा नौ होने के कारण आप को हमेशा याद रखना चाहिए कि आप का वजूद हड़रत मरयम का वजूद का तरह है। दूसरे शब्दों में हमेशा उन के आचरण और चिरत्र को मार्ग दर्शक के रूप में अपने सामने रखें..... प्रत्येक मोमिन औरत के लिए अनिवार्य है कि कि अगर वे अल्लाह तआला की बरकतें हासिल करना चाहती है तो अपने मान मर्यादा और इज़्ज़त की रक्षा करे। बहर हाल प्रत्येक वाक्फा नौ एक उदाहरण है और प्रत्येक लड़की के लिए एक रोल माडल है। और उन्हें चाहिए कि दूसरों को लज्जा, मान मर्यादा और इज़्ज़त करने में मार्ग दर्शन करें।..... हज़रत मर्यम का एक दूसरी ख़ूबी जो कुरआन करीम में वर्णन हुई है वह यह कि वह सिद्दीका थीं। सिद्दीका सच बोलने वाली औरत को कहते हैं..... अब आप ने ख़ुद इस अहद को नया किया है इस लिए आप को भी इसे हमेशा सच्चाई और ईमानदारी के रास्ता पर चलते हुए पूरा करना चाहिए। आप का प्रत्येक काम सच्चाई पर और ख़ुदा तआला के भय पर आधारित होना चाहिए। जो आप करें या कहें वे यह प्रकट करे कि आप वाक्फा नौ हैं। जो भी हो आप सच बोलने वाली की हैसियत से पहचानी जाएं। जब आप यह उच्च स्तर प्राप्त कर लेंगी सिर्फ आप तब अपना वादा पूरी करने वाली होंगी जो कि आप ने समय के ख़लीफा से किया है..... आप सब को यह याद रखना चाहिए यह काफी नहीं कि आप का चरित्र ऐसा है कि दूसरे आप पर आरोप न लगा सकें बल्कि इस से बढ़कर आप को ऐसा चरित्र धारण करना चाहिए कि आप का आचरण दूसरों के लिए एक आदर्श बन जाए।

इसलिए, अपनी इबादत के मामला में आपको सभी के लिए आदर्श होना चाहिए। अपनी सच्चाई के मामला में आपको प्रत्येक के लिए एक आदर्श होना चाहिए।

अल्लाह पर भरोसा करने का मामला में आप प्रत्येक के लिए एक आदर्श मॉडल हों। और अपनी सफाई और शुद्धता के आधार पर, आप सभी के लिए एक आदर्श हों इसी तरह, आपको असामान्य और समय नष्ट करने वाली वयस्तता से अपने आप को बचाने के लिए उदाहरण निर्धारित करना चाहिए। और किसी भी तरह से उन से प्रभावित न हों और आपको अवांछित फैशन और रीति-रिवाजों के लिए कोई प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। कहा जाता है कि लड़कियों को फैशन की ज़रूरत होती है और उनके फैशन के लिए कुछ कार्यक्रम होने चाहिए, लेकिन आपको उनसे दूर रहना चाहिए।

जब आप इन सभी गुणों को अपना लेंगी तो आप केवल एक ऐसा अस्तित्व नहीं होंगी जिस की नैतिकता उच्च गुणवत्ता की होंगी बल्कि आप भविष्य की पीढ़ियों की नैतिकता और तक्वा के गारंटर होंगी। इसलिए, हर समय अल्लाह तआला को सामने रखें और उन सभी से दूर रहें जिन्हें वह पसंद नहीं करता।

हमेशा ख़िलाफत के साथ वफादारी बनाए रखें और इस की सुरक्षा और स्थिरता के लिए हर प्रकार की कुरबानी के लिए तैयार रहें। आप जुम्अ: के ख़ुत्बों को ध्यान से सुनें हैं और समय के ख़लीफा की दूसरी तकरीरों को भी सुनें। और उन पर यथा सम्भव अनुकरण करें । अल्लाह तआला आप को ऐसा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। "

(वाकफ़ीन नौ की शिक्षा और प्रशिक्षण, पृष्ठ 163 से 168)

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफ़ात नौ (लजना) को प्रश्न करने की इजाज़त दे दी।

वाकफ़ात नौ के साथ मजलिस सवाल और जवाब

*इसके बाद एक वाक्फा नौ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में अर्ज़ किया कि उनकी माँ कैंसर की मरीज़ा हैं और वह दुआ का आवेदन करना चाहती हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।"

इसके बाद, एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि कुछ बच्चों या लोगों का नाम "मुहम्मद" रखा गया है और लोग नाम पुकार कर गली देते हैं, और साथ ही आदत के कारण फिर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी कहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "नाम मुहम्मद में रखने में कोई गुनाह नहीं है। मुहम्मद अहमद है या ग़ुलाम मुहम्मद या ऐसे नाम रखे जा सकते हैं? अगर किसी का नाम मुहम्मद है, तो वह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं है। अगर कोई कहता है, यह ग़लत है। अगर आपने कोई घटना देखी है तो आपको तुरंत इसे ठीक करना चाहिए। वाक्फा नौ का यह भी काम है कि वे सुधार करें। बेशक, कोई अन्य आपको जितना संभव हो उतना बता सकता है। यदि आपको सच्चाई के लिए मार भी खानी पढ़े तो खा लें।"

***इसके बाद एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि अगर किसी के लिए हज कर सकते हैं तो क्या किसी के लिए उमरा भी कर सकते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर किसी के लिए हज कर सकते हैं उमरा क्यों नहीं कर सकते? उमरा भी कर सकते हैं।

उसके बाद, वाक्फा नौ में से एक ने कहा कि हम में से कुछ ने लिखा है कि हम उस विभाग में जाएंगे लेकिन किसी मजबूरी के कारण से नहीं जा सकते। विवाह हो गए और इस क्षेत्र में नहीं गए। तो ऐसी अवस्था में क्या आदेश है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तब्लीग़ का क्षेत्र तो प्रत्येक के लिए ख़ाली है। यदि बच्चे हो गए हैं तो बच्चों के प्रशिक्षण का क्षेत्र खाली है इबादत का क्षेत्र खाली है। इबादतों के नमूने दिखाएं। अपने बच्चों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करें और अपने परिवेश में तब्लीग़ करें यदि आप तो लजना की तरफ से कोई काम मिलता है तो उसे एक वाक्फा नौ की तरह करें ।

***इस के बाद एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि हमारी जमाअत का slogan "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" है लेकिन कुछ संगठन हैं और कुछ लोग हैं जो निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे हैं। उनके बारे में क्या कहना चाहिए?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने इस संदर्भ में एक ख़ुत्बा भी दयाथा। ख्बे सुना और उनके points लेकर याद रखा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हमारा जो भी slogan है वह ला इलाहा अल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह से बना है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि तुम ज़ालिम की भी मदद करो और पीड़ित की भी मदद करो। सहाबा ने पूछा कि ज़ालिम आदमी की मदद कैसे करे? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "उस को ज़ुल्म करने से रोको। हाथ से रोको या ज़ुबान से रोको अन्यथा दुआ करो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "प्रत्येक के साथ प्यार का स्तर एक जैसा नहीं हो सकता।" आप का जो अपने बच्चे के साथ प्यार है उसका स्तर और है, जो माता-पिता के साथ प्यार है उसका स्तर और है, जो भाई बहन से है वह और है, जो दोस्तों से है वह और है। हर एक से प्यार का स्तर भिन्न है। अब चोर से तो हम सहानुभूति नहीं कर सकते हैं कि तुम ने चोरी की है। लेकिन इंसान के रूप में, हम उस आदमी के साथ सहानुभूति रखते हैं, लेकिन उस के कार्यों से हमें सहानुभूति नहीं होती है उस व्यक्ति के लिए जो किसी प्रकार का कोई भी ग़लत काम करता है इसके लिए प्यार और सहानुभूति की मांग यह है कि अगर उसे हाथ से नहीं रोक सकते, ज़बान से नहीं रोक सकते तो दुआ करके रोकें। लेकिन अगर आप दिल में द्वेष बिठाउसे चोट पहुंचाने की कोशिश करें तो यह नफरत है। प्यार के बड़े विशाल अर्थ हैं केवल भौतिक अर्थ नही लेने चाहिए। अगर आप के दिल में एस आदमियों के लिए द्वैष है तो यह घृणा बन जाती है। लेकिन अगर यह सुधार करने का एक प्रयास है, तो यह प्रेम की गुणवत्ता है।

***एक वक्फे नौ ने कहा कि मेरा तब्लीग़ के बारे में सवाल है। बहुत से लोग जमाअत से प्रभावित होते है ,ख़िलाफत से भी प्रभावित होते हैं लेकिन फिर भी वे जमाअत में शामिल नहीं होना चाहते हैं। तो एसे लोगों को कैसे गाइड करना चाहिए?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर शामिल नहीं होना चाहते तो न हों। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हिदायद देना और उसे जमाअत में शामिल करना मेरा काम है, तुम्हारा नहीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने फरमाया था "बल्लिग़ मा उन्ज़ल इलैक।" अत: आप का काम तब्लीग़ करना है। उन तक संदेश पहुंचा दें। जो लोग नेक स्वभाव के हैं और जिन में ख़ुदा तआला का भय है, वे आएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया:ऐसे कई लोग हैं जो जमाअत को भी अच्छा समझते हैं और साथ ही ख़िलाफत को भी अच्छा मानते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुआ करें कि उनके अहमदी होने में जो रोक पैदा हो गई है वह समाप्त हो और वह बैअत कर ले। क्योंकि मूल बात तो बैअत ही है। आप लोगों का काम है कि ऐसे लोगों के लिए दुआ करें। आप इसे मजबूर नहीं कर सकते हैं, न ही किसी को भी अहमदी बनने के लिए मजबूर किया जा सकता है। सन्देश पहुंचा दें। फिर अल्लाह तआला से दुआ करें और अल्लाह तआला को छोड़ दें। इस तरह से न्यूनतम संदेश पहुंच जाएगा। फिर एसी परिस्थिति उत्पन्न होगी कि उन की जो रोकें हैं वे दूर हो जाएंगे, या वे दुनिया के डर को खत्म करेंगे, या जमाअत इतनी तरक्की करेगी कि दुनिया को पता चल जाएगा कि लोग इसमें शामिल हैं, फिर लोगों के पास यह बहाना नहीं होगा कि हमें पता नहीं था कि जमाअत क्या चीज़ है। तो जब वह break through होगा तो इंशा अल्लाह लोग शामिल होंगे। अल्लाह तआला ने कुरआन में इसीलिए "फी दीनल्लाह अफवाजा" का उल्लेख फ़रमाया। आप का काम इस्तिग़फार करना और दुआ करना है वह करते चले जाएं और संदेश पहुंचाते चले जाएं।

* एक वक्फा नौ ने पूछा कि मैं इंजीनियरिंग में स्नातक हूं और intelligent systems प्रणाली में मास्टर कर रही हूं। मास्टर्स के कोर्स में तीन विभाग हैं जिन में जा सकती हूं। एक artificial intelligence दूसरा devices बनाने की फील्ड हैऔर तीसरा disabled intelligence सिस्टम बनाने का क्षेत्र है। मुझे कौन सा क्षेत्र चुनना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तीसरा क्षेत्र अक्षम लोगों के लिए एक विकलांग प्रणाली बनना है। बल्कि, जब यह करें तो हम ने रब्वा में भी विकलांग लोगों के लिए भी एक स्कूल खोला है। वहाँ भी वक्फ आरज़ी कर के आएं।

***एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि घटना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला जब दौरों जाते हैं तो क्या अपनी ख़ुद पैकिंग करते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "मैं स्वयं नहीं करता।" मेरी पत्नी ख़ुदा तआला के फज़ल से मेरी सहायता करती है।

एक वाक्फा नौ अपनी मां के लिए जो मस्तिष्क ट्यूमर से पीड़ित हैं। दुआ का निवेदन किया इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया " अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।"

*** इस के बाद एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि यहाँ जर्मनी में parental leave benefit मिलता जिसका उद्देश्य यह होता है कि जब बच्चा एक साल का हो तो माताएं जल्द से जल्द अपने काम पर लौटें और दूसरा उसका उद्देश्य यह भी होता है कि पिता भी बच्चों का ध्यान रखें। यहां का समाज यदि ऐसी चीज़ों का पालन करता है, तो क्या वह तरक्की कर सकते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर सरकार मातृत्व लाभ देती है, तो यह एक अधिकार है जो सरकार ने दिया है। इस पर क्या आरोप हो सकता है।? अगर कोई आदमी ऐसा करता है कि सरकार से पैसे ले ले और काम पर जाना छोड़ दिया कि तुम बच्चे पालोऔर मैं बाहर सैरपर जा रहा हूं तो यह नाजायज़ है। लेकिन अगर वह बीवी का हाथ बटा रहा है बच्चों की देखभाल कर रहा है, तो यह वैध है।

*** एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने पिछले ख़ुत्बा जुम्अ: में अपनी बुआ के बारे में फरमाया था कि उन्होंने लॉटरी ली थी।** हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने कभी भी "लॉटरी" शब्द का प्रयोग नहीं किया है। लॉटरी हराम है मैंने कहा था कि पुरस्कार बांड। पाकिस्तान में पुरस्कार बांड और पुरस्कार बांड कुछ ऐसा हैं जो जायज़ है। क्योंकि यदि आप एक पुरस्कार बांड ख़रीदते हैं, तो आप इसे बाद में बेच भी सकते हैं। लॉटरी में तो होता है कि एक लॉटरी निकल आती है और बाकी नष्ट हो जाती हैं लेकिन पुरस्कार बांड एक सरकारी योजना है यदि एक सौ रुपए का पुरस्कार बांड है जिसे एक बार नहीं लिया जा सकता है, अगली बार जब यह बाहर आता है। यदि नहीं निकल तो और चार, पांच या दस साल पड़ा रहता है तो भी आप को अपना सौ रुपए वापस मिल जाएगा। इसी तरह ब्रिटेन में भी पुरस्कार बांड प्रणाली है। पुरस्कार बांड ख़रीदना बिल्कुल जायज़ है लेकिन लाटरी एक बार ली और वह बर्बाद हो गई। मुझे दो या तीन पुरस्कार मिले और मिल गए लेकिन पुरस्कार बांड का पहला इनाम है, फिर यह दूसरा इनाम होता है, फिर एक तीसरा इनाम है, और फिर बहुत सारे इनाम हैं और पुरस्कार बांड का मूल्य हमेशा रहता है। अगर 100 रुपए का बांड होता है तो उसी तरह है जैसे सो रुपए का नोट रखा गया है। यदि पांच हज़ार रुपए का प्राइज़ ब्रांड है तो इसी तरह है जैसे घर में पाँच हज़ार रुपए का नोट रखा हुआ है। इस लिए बांड और लॉटरी के बीच एक बड़ा अंतर है। लॉटरी एक जूआ है, जबकि बांड जूआ नहीं है।

* एक वाक्फा नौ ने निवेदन किया कि मेरे जुड़वा बच्चे हैं उनके प्रशिक्षण की बड़ी चिंता होती है। क्या हुज़ूर अनवर अपने व्यक्तिगत अनुभव से कुछ सलाह दे सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया। अपना नमूना स्थापित करें। आप की नमाज़ें अच्छी हों। बच्चों को पता है कि आप नमाज़ें पढ़ने वाली हैं। जो माताएं और पिता नमाज़ पढ़ने वाले हैं, उनके छोटे छोटे बच्चे भी घर में ख़ुद ही जाए नमाज़ बिछाते हैं, और अल्लाह अकबर कह कर नमाज़ें पढ़ना शुरू कर देते हैं। तो बच्चों को बचपन से ऐसी आदतें मिलती हैं फिर पति पत्नी का आपस में जो संबन्ध है इस में अच्छी भाषा होनी चाहिए और अच्छे चरित्र होने चाहिए। आपस में बातचीत नर्म होनी चाहिए और प्यार मुहब्बत वाली हो तो बच्चों को भी अनुभव हो के प्यार मुहब्बत की बातें करनी हैं गाली गलौज नहीं करनी। इस प्रकार अपने नमूने दिखाएं। यही मैंने देखा है कि अगर अपने नमूने दिखाएं तो बहरहाल बच्चों पर प्रभाव होता है।

*** एक वाक्फा नौ ने कहा कि मैं एक डॉक्टर हूँ और यहां अहमदी डॉक्टरों की एसोसिएशन है। लज्ना का एक संगठन भी है क्या हम इस अहमदी डाक्चर के रूप में इस एसोसिएशन में रह कर पालन कर सकते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया आपकी एसोसिएशन के सिद्धांत या-कानून नहीं बने हुए है? इस में एक तो यह कि वक्फे आरज़ी के लिए जाएं। अफ्रीका में हमारे अस्पताल हैं, वहां अहमदी डॉक्टर वक्फे आरज़ी के लिए जा सकते हैं। फ़ज़ल उमर अस्पताल रब्वा में जा सकते हैं। कादियान में जा सकते हैं। दूसरा यह कि जो पैसा कमाने वाले लोग हैं वह ग़रीब छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की भी पेशकश कर सकते हैं। इसी तरह यहां सामान्य रूप से शिविर करके मानव सेवा के काम लिए जा सकते हैं। शरणार्थी कैम्पों में जा सकते हैं और सेवा कर सकते हैं।

एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि कहा जाता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ख़लीफा बने तो हज़रत अली रज़ि अल्लाह ने शीघ्र बैअत नहीं की बल्कि चालीस दिन बाद बैअत की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस में कोई न कोई हिक्मत होगी। कुछ व्यस्तता होगी या कोई कारण होगा लेकिन हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि अल्लाह की परी इताअत की इस बात को शीयों ने अधिक उठाया है कि हज़रत अली रज़ि अल्लाह ने पहले बैअत नहीं की थी। हालांकि यह बिल्कुल ग़लत है। कहीं से यह साबित नहीं होता कि हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला एक दिन या एक पल के लिए भी हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह की आज्ञाकारिता से बाहर गए हों। इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने एक किताब भी लिखी है। अब आप बड़ी हो गई हैं वक्फे नौ में भी हैं। इस किताब को पढ़े और अपना ज्ञान बढाएं।

*** एक वाक्फा नौ ने सवाल किया नमाज़े वितर में अगर दुआए कुनूत अगर भूल जाएं तो आवश्यक है कि दो रक्त दोबारा पढ़ें।?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: नहीं, दोबारा रकअत पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन सिज्दा सहू की भी ज़रूरत नहीं। अगर भूल गए तो कोई बात नहीं न सिज्दा सहू की जरूरत है न दोबारा पढ़ने की ज़रूरत है।

* एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि जब पति पत्नी का शादी होती है तो दोनों की एक दूसरे से बहुत आशाएं होती हैं परन्तु जब आशाओं पर नहीं उतरते तो तो छोटी छोटी बातों पर लड़ाइयां हो जाती हैं जो के बाद में बड़ी लड़ाइयां बन जाती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया जो मियां बीवी अधिक आशांए रखते हैं वे दोनों ही ग़लत हैं किसी आइडियल की तलाश नहीं करनी चाहिए। जो ज़िन्दगी और दुनिया की वास्तविकता है उस को समझना चाहिए। कोई भी इंसान प्रफैक्ट नहीं होता। औरत में कमियां कमज़ोरियां होती है और पुरुषों में भी होती हैं। इसलिए मेरे पास जब ऐसे जोड़ी आते हैं और कहते हैं कि शादी के बाद नसीहत करें तो उन्हें कहता हूं कि अपनी आंख, कान और ज़बान एक दूसरे की बुराईयां देख कर बंद कर लो तुम्हारे झगड़े समाप्त हो जाएंगे। अगर तलाश करने लगोगे तो खूद खूद कर कर बुराइयां मिल जांएगी। जैसे बात बनी हुई है कि आटा गूंदते संय कुहनी क्यों हिल रही है। इस पर भी लड़ाई हो जाती है।

एक वाक्फा नौ ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने किस अवसर पर बेगम साहिबा को उपहार देते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं किसी विशेष

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2017-2019/45- Vol. 2 Thursday 19 October 2017 Issue No. 42

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अवसर पर तो नहीं देता ईदों आदि पर ईदी आदि दे देता हों।

*** एक वाक्फा नौ ने सवाल किया कि मैं यहां एक संस्था में गई थी जहां पर एक आदमी बैठा हुआ था जिस ने सलाम के लिए आगे हाथ कर दिया। इस प्रकार के मामले में क्या करना चाहिए?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मेरे साथ भी कभी कभी ऐसा हुआ है और मैं तो यही करता हूं कि आगे थोड़ा झुक जाता हूं जिस से सामने वाले आदमी को समझ आ जाती है। यह तो आप ने अपने आप को ख़ुद बचाना है। अगर समाज से डरती हैं तो फिर कुछ नहीं होगा। दो चार बार ऐसा करेंगी और अगले को बता देंगी कि मेरा धर्म मुझे यही कहता है कि पुरुषों के साथ हाथ नहीं मिलाना तो वह ख़ुद ही ठीक हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप ने अगर अपनी धार्मिक शिक्षा को फैलाना है, लोगों को इसके विषय में बताना है और उस पर बने रहना है तो कई बार लोगों के दिलों में छोटी मोटी बैचेनियां पैदा होंगी और वह तो सहनी पड़ती हैं। यह सिर्फ आज की बात नहीं है बल्कि हमेशा ही एसे है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने फरमाया: यह उस समय की बात है जब भारत-पाक एक महाद्वीप था और वह ब्रिटिश प्रभाव के अधीन था, और इसके राज्यपालों और गवर्नर आदि होते थे। उन में से कुछ के हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के साथ व्यक्तिगत संबंध थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह लिखते हैं कि मैं दिल्ली गया था तो वहाँ एक लॉर्ड ने मेरी दावत की तो मैंने उसे कहा कि मुझे न बुलाओ क्योंकि वहाँ और भी बहुत सारे लोग होंगे और औरतें भी होंगी और मैंने महिलाओं से सलाम नहीं करना तो इस से लोगों में बेचैनी पैदा होगी। इस पर उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं। आप आ जाएं। तो मैंने कहा, ठीक है, तो फिर मैं एक कोने में बैठूंगा, एक कोने में बैठ में बैठ गए, लेकिन वहां भी एक पुराना परिचित ब्रिटिश मिलने के लिए आ गया और उसकी बावी ने हाथ बढ़ा दिया इस पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने फरमाया, मुझे माफ कर दें मैं महिलाओं से हाथ नहीं मिलाता। इस पर वह बड़े नाराज़ हुए और वह अंग्रेज़ ख़ुद भी बड़ा लज्जित हुआ और इस के बाद लिखा कि मैं सारी रात बेचैन रहा कि आप भी कहते होंगे कि मेरे साथ इतने पुराने संबंध हैं और मुझे इस्लाम की शिक्षा का भी पता है हालांकि मैंने अपनी पत्नी को नहीं बताया, कि सलाम के लिए आगे हाथ मत बढ़ना और मैं अपनी पत्नी के बारे में भी चिंतित हूं। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहा, मैंने इस को बाद में पत्र लिखा और उन्हें दावत दी और उस की पत्नी को भी बुलाया। उन्हें खाना आदि खिलाया और उन की अच्छी दावत हो गई और वे संतुष्ट थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर निकट के संबंध हैं तो यह भी संभव हो सकता है। लेकिन अगर एक दो बार ही मलिना है तो बहुत दूर से बताओ कि मुझे खेद है।

*** एक वाक्फा नौ ने कहा कि मेरी फूफू को पाकिस्तान (लाहौर) में शहीद कर दिया गया। मैं उनके लिए दुआ का अनुरोध करना चाहती हूं।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए । एक सौ डॉलर और एक मोबाइल के लिए उन्हें कत्ल कर दिया है जिसने मार डाला वह एक इलेक्ट्रानिक का काम करने वाला था जिस ने वहां से केवल 100 डालर चोरी किए हैं और एक मोबाइल चोरी किया और उस के लिए उन्हें शहीद कर दिया है।

*** एक वाक्फा नौ ने प्रश्न किया कि इस्लाम में छह कल्मे हैं जैसे कल्मा तय्यबा और कल्मा शहादत। शेष कलमों का क्या महत्व क्या है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ग़ैर अहमदियों ने कई कल्मे बनाए हुए हैं। असम कलमा तो لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰهِ ही है। और कुछ अवसरों पर أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ पढ़ा जाता है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तो यही साबित होते हैं, दूसरे जितने मर्ज़ी कलमें बना लें। (**शेष**.....)

☆ ☆ ☆

शेष पृष्ठ 12 पर

भरोसेमंद और आदिल होने में संदेह करना किसी तरह जायज़ नहीं। हज़रत अनस इस हदीस को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं। अत: यह हदीस मरफूअ मुत्तसिल है जिस की सेहत में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं।

फिर दरायत के अनुसार भी यह हदीस सही ठहरती है क्योंकि इस हदीस के एक वाक्यांश में भविष्यवाणी बयान हुई है। और इस हदीस की पेशगोइयों को अल्लाह तआला ने सच्चा साबित करके इस हदीस के सेहत पर मुहर लगा दी है। उदाहरण के लिए, हदीस के शब्द हैं:

لَا يَزْدَادُ الْأَمْرُ إِلَّا شِدَّةً وَلَا الدُّنْيَا إِلَّا إِدْبَارًا وَلَا النَّاسُ إِلَّا شُحًّا وَلَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ إِلَّا عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ وَلَا الْمَهْدِيُّ إِلَّا عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَم

(इब्ने माजा किताबुल फितन बाब शिद्दतुज़्ज़मान)

यानी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मामले तीव्रता धारण कर जाएंगे। दुनिया नैतिक पस्ती में बढ़ती चली जाएगी और लोग लोभ तथा लालच में तरक्की करते चले जाएंगे। क़यामत केवल बुरे लोगों पर आएगी। और मसीह इब्ने मर्यम के कोई महदी नहीं।

अत: इस अनुसार इस हदीस वर्णन की गई बातों का सच्चा होना प्रमाणित करता है कि यह रसूल की हदीस और सच्ची हदीस है। इस पहलू से

لا المهدی الا عیسیٰ

वाली हदीस रिवायत तथा दिरायता दोनों तरीके पर पूरी उतरती है।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad